हिन्दुस्तानी एकेडेमी, पुस्तकालय
इलाहाबाद

वर्ग संख्या ८१२.८

पुस्तक संख्या सर्व।सि

क्रम संख्या ५८६५

सिराजुद्दौला

(नाटक)

लेखक
सर्वदानन्द

डा० धीरेन्द्र वर्मा पुस्तक-संग्रह

राष्ट्रीय साहित्य-सदन
गुइन रोड, लखनऊ

प्रथमवार] सं० २०१५ वि० [मूल्य २)

प्रकाशक
सुशीलकुमार भार्गव
अध्यक्ष राष्ट्रीय साहित्य-सदन
१७ गुईन रोड (अमीनाबाद)
लखनऊ

अन्य प्राप्ति-स्थान—
१. राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल, मछुआ-टोली, पटना—४
२. गंगा-पुस्तकमाला, ३६, गौतम बुद्ध-मार्ग, लखनऊ

सर्वाधिक र प्र काशक के अधीन

मुद्रक
श्रीदुलारेलाल
अध्यक्ष गंगा-फाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

कला की संवर्द्धना का आसन जहाँ स्थित है—
उसके आगे नतशिर, वंदनामुखर
रंगमंच के पागल युवक-युवतियों को
साग्रह और सस्नेह ।

कुछ शब्द

'चेतसिंह' के बाद 'सिराजुद्दौला' मेरा दूसरा नाटक है, जो प्रकाश में आया है। दोनो ही शुद्ध रंगमंच की दृष्टि से लिखे गए और छपने के पूर्व ही अभिनय में सुविधा-असुविधा के अनुसार माँज लिए गए हैं। इतिहास की पृष्ठभूमि स्थिर रक्खी गई है और पर सच का आवरण डालने की व्यर्थ चेष्टा नहीं की गई। साहित्य और रंगमंच, दोनो से नाटक को संपृक्त रखने की मेरी चेष्टा रही है। सफलता-असफलता का माप-दंड मेरी बात नहीं।

नाटक के अभिनय और चित्रपट-संबंधी अधिकार मेरे पास रक्षित हैं।

सर्वदानन्द

भूमिका

श्री सर्वदानंद द्वारा प्रणीत 'सिराजुद्दौला' नाटक की पांडुलिपि मैं देख गया। इसके पूर्व इस नाटक का अभिनय भी देखने का अवसर मुझे मिला था। अभिनय को देखकर मेरी जो धारणा बनी थी, नाटक पढ़कर उसकी पुष्टि हुई है। श्री सर्वदानंद ने भारतीय इतिहास की एक प्रमुख घटना को नाटक का रूप देकर इस प्रकार प्रभावोत्पादक बना दिया है कि वह एकमात्र अतीत की वस्तु न रहकर वर्तमान तथा भविष्य से भी संपृक्त हो गई है।

प्रस्तुत नाटक में वर्णित घटना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यद्यपि भारत के भाग्य का निर्णय पानीपत की एकाधिक लड़ाइयों के फल-स्वरूप हुआ, भारतीय शासकों की पराजय के पीछे आपस की फूट सदैव ही मुख्य कारण रही किंतु प्लासी का युद्ध सिराजुद्दौला को जिस फूट के वातावरण में करना पड़ा, उसका उदाहरण कदाचित् ही अन्यत्र मिलेगा। व्यापारी के रूप में भारत में आकर अँगरेज़ी राज्यशक्ति ने शनैः-शनैः भारतीय राजाओं को विभेद द्वारा आपस में लड़ाकर अपना पाँव यहाँ की धरती पर जमाया। अँगरेज़ आए और प्रायः डेढ़ सौ वर्षों तक हमारी स्वतंत्रता का अपहरण करने के उपरांत यहाँ से जाने को बाध्य हुए, किंतु मीरजाफ़र को न हम आज विस्मृत कर सके और न आनेवाली पीढ़ियाँ ही उसके कृत्य का विस्मरण करेंगी।

पुस्तक में उसी दुर्भाग्य-पूर्ण घटना को नाटक का आवरण दिया

गया है। इतिहास हमारा सहृदय शिक्षक है। अतीत के अनुभव इसी माध्यम से वर्तमान को उपलब्ध होते हैं और भविष्य की दिशा निर्दिष्ट करने में हमारे सहायक बनते हैं। किंतु घटनाओं का नीरस क्रमबद्ध विवरण तथ्य-निरूपण की दृष्टि से चाहे कितना ही महत्त्वपूर्ण हो, यदि उसमें जीवन का स्पंदन नहीं, तो उसका प्रभाव अत्यल्प हो जाता है। नाटककार ने, जिनका हिंदी-सेवी के रूप में अपना स्थान है, इस शिक्षाप्रद घटना को नाटक का आवरण देकर इसकी प्रभावोत्पादकता को द्विगुणित कर दिया है।

भारत में आज नवीन युग की रचना हो रही है। हम नवीन मूल्यों के निर्धारण के हेतु सचेष्ट हैं। हमें अपने अतीत से प्रेरणा और शिक्षा लेनी है। उन घटनाओं की आवृत्ति हमें रोकनी ही होगी, जो इस देश के अभ्युदय की अवरोधक रही हैं। स्वतंत्रता के उपरांत भी अभी हम पूर्ण-रूप से राष्ट्रहित को सर्वोपरि समझने में समर्थ नहीं हो रहे हैं। वर्ग-भेद, सांप्रदायिक विभेद और हिंदू-मुसलिम के प्रश्न समय-समय पर आ उपस्थित होते हैं। उनका प्रभाव कभी-कभी इतना विकट होता है कि साधारण चेतना का व्यक्ति अपने विवेक को अस्थिर पाता है। इस वातावरण में प्रस्तुत नाटक का वर्ण्य-विषय पाठकों को चिंतन की नवीन सामग्री प्रदान करेगा। वे देखेंगे कि पारस्परिक ऐक्य और सौहार्द से ही समस्याओं का समाधान संभव है। हम जब-जब इन गुणों के अनुवर्ती बने, हमारा पथ निरापद रहा। साथ ही, इतिहास साक्षी है कि इनसे विमुखता ने सदा प्रगति और उन्नति का मार्ग अवरुद्ध किया।

'सिराजुद्दौला' में नाटकीयता सर्वत्र विद्यमान है। वातावरण की सजीव सृष्टि करने में लेखक समर्थ है। भाषा विषयानुवर्तिनी तथा संवाद प्रभावोत्पादक हैं। दर्शक और पाठक दोनो को इसकी

पंक्तियाँ रससिक्त करने में समर्थ होंगी, इसमें मुझे संदेह नहीं है। श्री सर्वदानंद अनुभवी लेखक के साथ-साथ स्वयं एक कुशल अभिनेता भी हैं। इन दोनो गुणों का उनकी रचना में सुंदर संयोग हुआ है। सिराजुद्दौला, मोहनलाल और मीर मदन के परिमार्जित चरित्रों की हमें अतीत में भी आवश्यकता थी, वर्तमान और भविष्य में भी रहेगी। किसी भी राष्ट्र का निर्माण ऐसे ही चरित्र-नायकों के आदर्श पर होता है।

मैं श्री सर्वदानंद को इस सफल रचना के सृजन पर बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ, उनकी लेखनी से राष्ट्र और राष्ट्रभाषा की आगे भी इसी भाँति सेवा होती रहेगी।

कमलापति त्रिपाठी

(शिक्षा, गृह और सूचना मंत्री, उत्तर प्रदेश)

सूचना

उत्तर प्रदेश-सरकार के तत्त्वावधान में सूचना-विभाग द्वारा आयोजित नाट्य-समारोह में इस नाटक का सर्वप्रथम अभिनय ३१ जनवरी, १९५८ को प्रस्तुत हुआ। नाटक के प्रदर्शन में जिन कलाकारों ने भाग लिया, उनके नाम क्रम से निम्न-लिखित हैं।

मोहनलाल	निर्मलकुमार घोषाल
मीर मदन	किशनलाल दुआ
मीर जाफ़र	प्रभातकुमार घोष
राज वल्लभ	विश्वेश्वरदयाल श्रीवास्तव
रायदुर्लभ	जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव
मीरन	पार्थराय
सिराजुद्दौला	सर्वदानंद
लुत्फ़ुन्निसा	सोना चटर्जी
मेहर अली	मुहम्मद वहीद ख़ाँ
अमीना	देवकी पांडे
मुहम्मद बेग	मुहम्मद शमीम
वाट्स	विश्वंभरचंद्र जोशी
अमीचंद	अमर राय
उम्मत ज़हूरा	ऋतुराय

एक

[बंगाल, बिहार और उड़ीसा के नवाब के मुर्शिदाबाद-स्थित महल का एक कक्ष। प्रतापी नवाब अलीवर्दी ख़ाँ लगभग दस वर्षों पूर्व स्वर्गीय हो चुके हैं, और इस समय उनके नाती सिराजुद्दौला नवाबी मसनद के स्वामी हैं। मंच का पर्दा हटने पर कक्ष का जो रूप देख पड़ता है, उसमें पार्श्व की दोनो दीवारों पर तलवार और भाले लटके दिखाई पड़ते हैं, तथा उनके बीच में एक-एक द्वार है। द्वारों पर रेशमी पर्दे लटक रहे हैं। बीच की दीवार में एक बड़ी खिड़की है, जिस पर जाली का पर्दा लटक रहा है। उसके पीछे का दृश्य मंद प्रकाश के कारण स्पष्ट नहीं है। मंच की सजावट में नवाबी वैभव बोल रहा है, पर नवाब सिराजुद्दौला के अकर्मण्य और विलासी न होने का परिचय भी मिलता है। ऊपर लटकते झाड़ में मोमबत्तियाँ जल रही हैं। उसके ठीक नीचे एक चौकी, जिस पर मख़मली चादर बिछी है और मसनदें रक्खी हैं। यथासंभव अन्य आवश्यक उपकरण भी।

मीर मदन तलवारों को एक-एक करके देखता है, फिर यथा-स्थान टाँग देता है। मोहनलाल खिड़की के पास खड़ा उस पार देख रहा है। खिड़की के नीचे एक तिपाई पर कपड़े में लपेटा क़ुरान रक्खा है। सामने का पर्दा हटने के पूर्व ही नेपथ्य में स्त्री-कंठ से

सुनते कान बहरे हो गए। उनकी आँखों का जादू बंगाल की गोरी-गोरी सुंदर लड़कियों पर ही चलकर रह गया, फिरंगी उस जादू के बस में नहीं हुए। उँगलियों का जादू सरगम के सातों सुरों को ही बाँध सका, मरहूम नवाब अलीवर्दीखाँ की दो आँखें—हिंदू और मुसलमान—उस डोरे में न बँध सकीं। हुँः।

मोहनलाल—तलवारों की झनकार ने तुम्हारे कान संगीत की झनकार की ओर से बहरे कर दिए हैं मीर मदन।

मीर मदन—बहरा हो गया होता, तो अच्छा था। इन कानों में फिरंगी बनियों के बूटों के नीचे रौंदी हुई बंगाल की धरती की घुटी हुई चीख़ तो न पड़ती। बोलो मोहनलाल, संगीत की झनकार में है इतनी ताक़त कि फिरंगियों के बढ़े हुए क़दम रोक दे? कंपनी को लगाई हुई आग सरगम के छींटों से बुझा सकते हो?

मोहनलाल—आज तो यह संभव नहीं है भाई?

मीर मदन—और आज यह भी नामुमकिन है कि नवाब सिराजुद्दौला के सितार के तार और बेगम के गले को काँपती आवाज़ हिंदू-मुसलमानों के दिलों को छूकर फिर एक बना सकें।

निम्न-लिखित गीत राग केदार में अवतरित होता है । साथ ही सितार पर भी वही स्वर अवतरित हो रहे हैं ।

राग केदार—त्रिताल (विलंबित)

अब कल ना परे मीतवा ।
बेगि दिखाओ माई अपनो सुंदर दरसवा ।
जब लग तब लग यहि कथा काम की
एकहुन मानि दुख पावन लागी,
सदा रँगीला चरनन तरसवा ।
अब कल.....

[पर्दा धीरे-धीरे हटता है, और कुछ क्षणों तक गीत गूँजता रहता है। मीर मदन तलवारों और मोहनलाल विचारों के साथ उलझे देख पड़ते हैं ।]

मोहनलाल—कुछ भी कहो मीर मदन, नवाब सिराजुद्दौला की उँगलियों में जादू है ।

मीर मदन—(तलवारों से ही उलझा रहता है ।) और बेगम के गले में भी ।

मोहनलाल—सरगम के सातों स्वर उनकी मोहनी में जैसे बेहोश हो जाते हैं ।

मीर मदन—नवाब सिराजुद्दौला की आँखों में जादू है । नवाब सिराजुद्दौला की उँगलियों में जादू है । सुनते-

मोहनलाल——सिराजुद्दौला ने हिंदू और मुसलमान में भेद कब माना मीर मदन ? नवाब अलीवर्दीख़ाँ ने मरते समय उन्हें यही मंत्र दिया था कि इंसान मज़हब से ऊँचा है। आदमी की संतान को आदमी बनकर रहना होगा। हिंदू और मुसलमान, दोनो के दिल धर्म की दीवारों से अलग न होने देना। सिराजुद्दौला ने अपने नाना की इस आज्ञा पर पूरा-पूरा अमल किया है।

मीर मदन——काले बादल तो आसमान पर उसी वक़्त मँडराने लगे थे। (कुछ करुण स्वर में) अलीवर्दीख़ाँ साहब के मरने के दिन की बात मुझे याद आ रही है। सुबह हो रही थी। आख़िरी हिचकी का इंतज़ार था। वह कमरे की सब खिड़कियाँ खोल देने के लिये कह रहे थे और बेगम साहबा ऐसा नहीं करना चाहती थीं। उन्हें डर था कि नवाब का बीमार जिस्म सुबह की वह ठंडी हवा बर्दाश्त न कर सकेगा।

मोहनलाल——डर तो सही था। मैं उस समय कहाँ था ? मैं होता तो कभी खिड़कियाँ न खोलने देता।

मीर मदन——रात-भर तो तुम भी उनके पलँग के पास जागते रहे थे। उस वक़्त नहा-धोकर पूजा करने

चले गए थे। उनके बहुत इसरार करने पर हमने खिड़कियाँ खोल दीं।

मोहनलाल——सुबह की उस हवा ने ही उनकी मृत्यु को पास बुलाया तब ?

मीर मदन——नहीं, वह तो बहुत देर से उनकी राह देख रही थी। उन्हें तो जाना ही था। इस कफ़स में वह घुट रहे थे। खिड़कियाँ खुल जाने पर एक बार उन्होंने चैन की साँस ली। बेगम साहबा से रुक-रुककर कहने लगे——इस मामूली-सी हवा से घबराती हो ? एक दिन रोओगी। सुबह फिर भी होगी। लेकिन आज के बाद जब कभी यह पुरवैया चलेगी, और तुम्हें याद आएगा कि तुम्हारा शौहर, बंगाल का नवाब अलीवर्दीख़ाँ, ज़रा-सी आज़ाद हवा के लिये तरस-तरसकर मर गया, तब तुम्हारे आँसू न थमेंगे।

मोहनलाल——(आँखों से आँसू बह रहे हैं, जिन्हें चुपके से पोंछ लेते हैं।) हमारे स्वर्गीय नवाब साहब मनुष्य के रूप में कोई देवता थे मीर मदन।

मीर मदन——बेगम साहबा के बाद वह हमारी ओर मुख़ातिब हुए और चेतावनी दी——तुम लोग पच्छिम से उठती हुई वह धूल-भरी आँधी नहीं देख रहे हो ? उसका

तेज़ शोर तुम्हारे कानों तक नहीं पहुँच रहा है ? पहले उसे रोको । हिंदोस्तान, प्यारा वतन, रहेगा, तो हज़ार अलीवर्दी होंगे । अगर एक लाख अलीवर्दियों की क़ुर्बानी से हिंदोस्तान को बचा सकते हो, तो वही करो तुम लोग ।

मोहनलाल—नवाब अलीवर्दीख़ाँ साहब इतने दूरंदेश न होते, तो उसी समय उन्होंने अँगरेज़ों और फ़्रांसीसियों की क़िलेबंदियाँ क्यों बंद करवा दी होतीं ?

मीर मदन—उन्होंने सिराजुद्दौला से यह भी कहा था कि मुल्क के अंदर परदेसी क़ौमों की ताक़त पर नज़र रखना । अगर ख़ुदा मेरी उम्र थोड़ी और बढ़ा देता, तो मैं तुम्हें इस डर से भी आज़ाद कर देता, पर मेरे बेटे, अब यह काम तुम्हें करना होगा । इन परदेसियों ने हमारे शाहंशाह का मुल्क लूट लिया है और रिआया का धन छीनकर आपस में बाँट लिया है । अँगरेज़ों की ताक़त बढ़ गई है, पहले उन्हें ज़ेर करना । उन्हें क़िले बनाने या फ़ौजें रखने की इजाज़त न देना ।

मोहनलाल—तुम्हें याद है न मीर मदन, अपनी मृत्यु-शय्या के पास बुलाकर उन्होंने हम सबसे क्या कहा था । कितनी लाचारी थी उन काँपते हाँथों में,

जिनसे सिराज को उन्होंने हमें सौंपा था। और कितनी ग़रीबी और बेकसी थी उस बूढ़े शेर के बोलों में, जो उस वक़्त उसके मुँह से निकले थे·····सिराज अभी बच्चा है। चौबीस-पचीस बरस का सिन खेलने का है। इस उम्र में ही भारी बोझ उसके कमज़ोर कंधों पर डालकर जा रहा हूँ। तुम लोग मेरे सुख-दुख के साथी रहे हो। मेरी इस धरोहर को सँभालकर रखना।

[इस बीच मीर मदन फिर खिड़की के पास पहुँचकर उस पार देखने लगा है। सितार के स्वर और स्पष्ट सुन पड़ते हैं। कुछ क्षणों बाद एक स्वर सुन पड़ता है···· "नहीं मीरन, अभी वक़्त नहीं आया है। मीर मदन और मोहनलाल से उलझने से कोई फ़ायदा नहीं। हमारी दुश्मनी सिराजुद्दौला से है, उसके दरबारियों से नहीं।" दूसरा स्वर···· "लेकिन मीर जाफ़र साहब, शराब और स्त्रियों से अब सिराजुद्दौला को नहीं बहलाया जा सकता। फिर और उपाय क्या है?" मोहनलाल भी चुपचाप मीर मदन के पास खड़ा हो जाता है और नेपथ्य में संलाप बंद होने की प्रतीक्षा कर रहा है। सहसा मीरन प्रवेश करता और मीर मदन को देखकर जल्दी से जाने लगता है। मीर मदन आगे बढ़कर कहता है— "भागो नहीं मीरन। वतन का नाम तुम-जैसे सपूतों से ही रोशन होगा।" मीरन जाते हुए नेत्रों से आग बरसाता है। मीर मदन हँस देता है।]

मोहनलाल—(नेपथ्य की ओर देखकर) आज हमारे नवाब सिराजुद्दौला चारो ओर से घिर गए हैं। स्वर्गीय नवाब अलीवर्दीख़ाँ ने जिन हाथों को उनके लिये रक्षक समझा था, वही आज भक्षक हो गए हैं। अमीचंद.....

मीर मदन—(सहसा उत्तेजित हो उठता है।) मोहनलाल, तुम हिंदू हो। बिरहमन तुम लोगों में ऊँचा माना जाता है। अमीचंद भी हिंदू है। उसने एक दिन सिराज के दरबार में बिरहमन के क़दमों पर सिर रखकर क़सम खाई थी कि ताज़िंदगी नवाब का साथ देगा। यही उसका धरम है ?

मोहनलाल—देश-द्रोहियों की कोई ज़ात नहीं होती मीर मदन। सात समुद्र पार से आए फिरंगी सौदागर उसे बहकाकर अपना काम निकाल रहे हैं। लेकिन अब कलकत्त की अँगरेज़ी कोठी में क़ैद अमीचंद और दीवान राजवल्लभ के बेटे किशनदास को देश-द्रोह का मूल्य मिल गया है।

[मीर जाफ़र, दीवान राजवल्लभ, रायदुर्लभ और मीरन का प्रवेश।]

मीर जाफ़र—(उत्तेजित स्वर में) अब यह तो आपकी सरासर ज़्यादती है सिपहसालार मीर मदन साहब। अमीचंद की ग़ैरमौजूदगी में आप उनके ऊपर तुहमत

लगा रहे हैं। इसका जवाब किसी शरीफ़ आदमी के पास नहीं हो सकता।

मोहनलाल—(आगे बढ़कर) हाँ, कोई शरीफ़ आदमी इस सवाल का जवाब नहीं दे सकता। जवाब देने के पहले उसकी जीभ कटकर गिर पड़ेगी।

राजवल्लभ—आप हद से बाहर जा रहे हैं मोहनलालजी।

मीर मदन—वतन के ख़िलाफ़ छिपे-छिपे बग़ावत करनेवाला इंसान आदमीयत की हद पहले ही लाँघ चुका राजवल्लभ। तुम्हारे लिये भी इस सवाल का जवाब देना मुश्किल होगा। तुम भी उन्हीं काले नागों में हो, जिन्हें नवाब अलीवर्दीख़ाँ ने दूध पिलाकर पाला था।

राय दुर्लभ—वतनपरस्ती के जोश में आप यह भूल रहे हैं कि अमीचंद की थैली ने ही बंगाल में नवाबी की जड़ जमाई। औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद दिल्ली की सल्तनत टट-फूटकर बिखर गई, और मराठों ने बंगाल पर हमले शुरू किए। अलीवर्दीख़ाँ को एक पाई की मदद दिल्ली से नहीं मिली। उस वक़्त कौन आगे बढ़ा ? अमीचंद, स्वरूपचंद और महताबचंद ही तो ? उनके रुपयों ने ही तो बंगाल में मराठों की तलवार का पानी उतारा ?

मीर मदन—और आज वही रुपए की ताक़त क्लाइव और वाट्सन और वाट्स की बेईमानी से मिलकर बंगाल को नेस्तोनाबूद करने पर तुली हुई है। जो थैली हुज़ूर नवाब साहब की क़दमबोसी करके वतनपरस्ती के तवारीख़ में अपना नाम बलंद करती, वह परदेसी बनियों के तलवे चाट रही है। बेग़ैरती का इससे बढ़कर इज़हार और क्या होगा ?

मोहनलाल—कहो दीवान राजवल्लभ, धन-संपत्ति तो सब किशनदास के साथ कलकत्ता भेज चुके, अब ? बेटा फिरंगी के क़ैदख़ाने में और संपत्ति फिरंगी की मुट्ठी में। अब तुम्हारा क्या विचार है ?

राजवल्लभ—हँस लो, हँस लो मोहनलाल। इस समय बाजी तुम्हारे हाथ है।

मीर जाफ़र—लेकिन आप लोगों के पास सुबूत क्या है ? मरहूम नवाब अलीवर्दीख़ाँ के मोतबर आदमियों का इस तरह ज़लील करने का हक़ आपको किसने दिया ? वतन का दर्द महज़ आपके ही दिल में नहीं है। हम भी ईमान पर क़ुर्बान होना जानते हैं।

मीर मदन—आपसे उम्मीद भी यही थी मीर जाफ़र साहब। नवाब अलीवर्दी के बहनोई से इसी दिलेरी और

ईमानदारी की उम्मीद थी, लेकिन·····(ठंडी साँस) लेकिन बंगाल के भाग में शायद कुछ और ही है। नवाब सिराजुद्दौला का नामोनिशान इस दुनिया से मिटानेवाले होंगे हम।

मोहनलाल—बंगाल को फिरंगी के हाथ बेचेंगे हम। देश के मुँह पर कालिख पोतनेवाले होंगे हमारे अपने हाथ। फिरंगी तो बहाना है, भारतवर्ष डूबेगा हमारे लोभ से, हमारी फूट से।

राजवल्लभ—बस कीजिए मोहनलालजी। यह अपमान मैं नहीं सह सकता। (करुण कंठ) मेरा बेटा किशनदास आज फिरंगी की अँगरेज़ी कोठी में क़ैद है। सब रुपए-पैसे लेकर भी अँगरेज़ों ने मेरा और उसका विश्वास नहीं किया। मेरे मन पर क्या बीत रही है, मैं ही जानता हूँ। उस पर यह व्यंग्य!

राय दुर्लभ—अब इस दरबार में हमारी क्या इज़्ज़त है, समझ लो राजवल्लभ! हमारे मुँह पर ही हमारा अपमान हो रहा है, और हम कुछ कर नहीं सकते।

राजवल्लभ—इन बातों का फ़ैसला अब एक बार हो जाना चाहिए, समझे मीर मदन साहब! आपको नवाब सिराजुद्दौला की शह है, तभी हमारा अपमान करने की

ज़ुर्रत होती है। इज़्ज़त बेचकर हम इस दरबार में नहीं रह सकते। चलो राय दुर्लभ।

[क्रुद्ध दृष्टियों से सबकी ओर देखते हुए दीवान राजवल्लभ और राय दुर्लभ का प्रस्थान। मीरन के, जो अब तक कुछ बोल नहीं पाया था, मुख पर क्रोध के भाव स्पष्ट परिलक्षित हो रहे हैं। वह घूमकर अपने पिता मीर जाफ़र की बग़ल में आ जाता है, और कमर से लटकी तलवार की मूठ पर तेज़ी से हाथ रखता है। मीर मदन देख लेता है।]

मीर मदन—(मीरन के पास जाकर कंधे पर हाथ रखता है।) शाबाश बेटे, पर यह जवाँमर्दी दुश्मनों के लिये होती, तो तारीफ़ की बात थी। बुज़ुर्गों पर और मालिकों पर उठने के पहले यह हाथ कटकर गिर जाना चाहिए। मीर जाफ़र साहब, बेटे को अदब करना सिखाइए।

मीर जाफ़र—(मीर मदन की ओर तीखी दृष्टि से देखकर) मीरन, तुम जाओ, देखो नवाब साहब कहाँ हैं। सिराज से कहना, हम यहाँ उनका इंतज़ार कर रहे हैं। जाओ।

(मीरन का आजिज़ी से प्रस्थान।)

मीर जाफ़र—(कुछ क्षणों बाद) यह सब क्या हो रहा है मीर मदन ? आपस की यह फूट हमें कहाँ ले जायगी ?

मोहनलाल—यही प्रश्न हमारे सामने है मीर जाफ़र

साहब। इसी फूट से रावण की इतनी बड़ी सोने की लंका जल गई। अमीचंद अँगरेज़ों की ओर क्यों जा मिला ? मुर्शिदाबाद के ख़ज़ाने का एक बड़ा हिस्सा पाने की लालच ने उसे सिराजुद्दौला से विश्वासघात करने को उकसाया। लेकिन काम निकल जाने पर फिरंगी ने उसे क़ैदख़ाने में डाल दिया।

मीर मदन——नवाब के तीस करोड़ रुपयों के ख़ज़ाने का एक बड़ा हिस्सा इतना मामूली न होगा कि उसके लिये कोई ख़ुशी से फिरंगी के क़ैदख़ाने में कुछ दिन न गुज़ार दे। क्यों मीर जाफ़र साहब ? नवाब सिराजुद्दौला भी आपकी इज़्ज़त करते हैं। एक बात पूछूँ ?

मीर जाफ़र——पूछिए, अपने इमकान पर जवाब दूँगा।

मीर मदन——सिराज अभी बच्चे हैं। मरते वक़्त नवाब अलीवर्दी ने उन्हें हमारे हाथ में सौंपा था। उनके भोले, मासूम होठों पर झूठी मुस्कान देखने के लिये क्या आप उन्हें असलियत से दूर रक्खेंगे ? चीनी में लपेट-कर ज़हरीली गोलियाँ देंगे ?

मीर जाफ़र——नहीं-नहीं, यह तो बड़ा भारी क़ुफ़्र होगा।

मीर मदन—लेकिन हम वही कर रहे हैं। अपने मुँहों पर नकाबें डालकर हम उनके सामने जाते हैं, ताकि उनकी आड़ में छिपा भयानक चेहरा देखकर वह दहल न जायँ। हम सब धोखा दे रहे हैं, और हम यह जानते हैं।

मीर जाफ़र—लकिन हम धोखा उन्हें कहाँ दे रहे हैं? यह आप कह क्या रहे हैं?

मीर मदन—अपने दिल पर हाथ रखकर सुनिए, हर धड़कन दग़ा और फ़रेब की कहानी कह रही है या नहीं? कितने हिंदू राजा और रईस फिरंगी से मिल गए हैं, यह क्या आपसे छिपा है? जो दरबारी और नातेदार आज छिपे-छिपे फिरंगी के इशारों पर नाच रहे हैं, नाम गिनाऊँ उनके? मुसलमान राज के ख़िलाफ़ ग़दर करने और सिराजुद्दौला को ख़त्म करने के लिये कंपनी हिंदुओं को भड़का रही है, और हमारी ओर से इस साज़िश में कौन-कौन शामिल है, यह क्या आपको बताना होगा? मैं समझता हूँ, आप मुझसे ज़्यादा उन लोगों के नज़दीक हैं।

मीर जाफ़र—(चीख़कर) मीर मदन। एक लफ़्ज़ भी अब आगे न कहना। मेरे सब्र को चुनौती मत दो।

अदब-लिहाज़ अभी दुनिया के पर्दे से उठ नहीं गए हैं। यह मत भूलो कि तुम मीर जाफ़र से बातें कर रहे हो।

मोहनलाल---इनकी ग़लती मुआफ़ कर दें मीर जाफ़र साहब। इन्हें तो यह भी याद नहीं कि यदि आपका षड्यंत्र सफल हो गया होता, तो मुर्शिदाबाद की गद्दी पर सिराज की जगह आप बैठते। दया आती है बेचारे पूर्निया के नवाब और सिराज के रिश्तेदार शौक़त जंग पर, इसी कोशिश में वह राजमहल में मारा गया।

मीर जाफ़र---सारी दुनिया आज सिराजुद्दौला के ख़िलाफ़ उठ खड़ी हुई है, यही तुम लोग कहना चाहते हो न ? अगर यह सही है, तो इसका कोई सबब भी तो होगा ?

मीर मदन---सबब ? हमारा आपका दिल ग़द्दारी में धड़क रहा है जनाब। हर साँस जो हम ले रहे हैं, वह बेईमानी की है। हमारी हर बात आज धोखा और फ़रेब से भरी हुई है। सिराजुद्दौला का क़ुसूर यही है कि वह ख़ुद किसी को धोखा नहीं दे सकते।

मोहनलाल---नवाबी मसनद सबके लिये लाल इंद्रायण फल बन गई है। अपनी-अपनी गर्ज़ में बावले बने

हम घूम रहे हैं। सिराजुद्दौला के लिये मसनद के फूल तीखे काँटे बन गए हैं।

मीर जाफ़र—तो इसमें हमारा धोखा और फ़रेब आपको दिखता है? फिरंगी को हमने न्योता देकर बुलाया था?

मोहनलाल—नहीं, फिरंगी ने हमें न्योता दिया। उसने देखा कि सिराजुद्दौला का गद्दी पाना हम बर्दाश्त नहीं कर सकते। नवाबी मसनद पाने पर सिराजुद्दौला को कंपनी ने नज़र नहीं भेंट की। बंगाल के नवाब को बंगाल में ही कासिमबाज़ार की कोठी में घुसने से फिरंगी रोक सकता है। मैं पूछता हूँ, यह सब किसके बल पर हो रहा है? फिरंगी के हिम्मत की ख़ूराक कौन जुटा रहा है?

मीर मदन—दिल्ली-दरबार से फिरंगी को माल पर चुंगी की जो माफ़ी मिली थी, वह कंपनी आज अपने दस्तकों के ज़रिए खुले आम बेच रही है। और रुपए दे-देकर ख़रीद कौन रहा है? हमारे हिंदोस्तानी सौदागर। हमारा यह धन किसकी जेबों मे जा रहा है मीर जाफ़र साहब? यह ग़द्दारी नहीं है?

मोहनलाल—बजबज के क़िले को फिरंगी के हाथ

किसने सौंपा ? क़िले के अंदर फिरंगी ने निरपराध हिंदू-मुसलमानों का जो क़त्लेआम किया, उसके पीछे राजा मानिकचंद का धोखा नहीं था ? पूरे सात दिनों तक हुगली नगर और उसके आस-पास भारतीय जनता का जो रक्त फिरंगी ने पानी की तरह बहाया, उसमें हमारे हाथ भी क्या रँग नहीं उठे हैं ?

मीर मदन—और वह ख़ून अब रंग लाएगा मीर-जाफ़र साहब । आज़ादी के तवारीख़ में निहत्थे इंसानों का बहा हुआ हर बूँद ख़ून ज़ालिम के लिये समुंदर साबित हुआ है । सिराजुद्दौला रहें या न रहें, हमारी ग़द्दारी और बेईमानी अगली पीढ़ियों को वतन की ख़ाक के लिये मर मिटने का हौसला देगी ।

मीर जाफ़र—वही ख़ाक अब सिराजुद्दौला को भी पनाह देगी मीर मदन । आज मीर जाफ़र, मीरन और घसीटी बेगम उसके लिये बेगाने हो गए हैं और उसके अपने बने हैं मीर मदन और मोहनलाल । हुँ: ! पहले अपने दिल टटोलो तुम लोग । सिराजुद्दौला की निगाह में ऊँचे उठकर दरबार में ऊँचा रुतबा पाने की चाह तुम्हें नहीं है ? मैं सिराज की मा अमीना के पास जा रहा

हूँ। उससे सब कुछ कहना होगा। तुम लोगों की ख़ुदग़र्ज़ी का पर्दा फ़ाश करना ही होगा।

[क्रोधित मीर जाफ़र एक ओर निकल जाता है। मोहनलाल उसके पीछे चलता हुआ कहता है—।]

मोहनलाल—हाँ, हम भी ग़द्दार हैं मीर जाफ़र। हम भी स्वार्थी हैं। हम ग़द्दार हैं तुम्हारे लिये और उन सब लोगों के लिये जो हिंदोस्तान की हरी-भरी धरती को ख़ून से लाल बना देना चाहते हैं। हमने ग़द्दारी की है नफ़रत से, देश की बरबादी से और आपस की फूट से। चलो मीर जाफ़र, मैं भी चलता हूँ। आज नवाब साहब की मा के सामने हमारी ग़द्दारी का फ़ैसला होगा।

[मोहनलाल का भी तेज़ी से प्रस्थान।]

मीर मदन—हम ख़ुदग़र्ज़ हैं? ऊँचा रुतबा पाने की चाह लेकर हम सिराजुद्दौला की ख़िदमत कर रहे हैं? (कुछ सोचकर) अगर अपने बहनों की अस्मत लुटने से बचाना, अपने बच्चों की रोटी माँगना और अपने देश की पूजा करना ख़ुदग़र्ज़ी है, तो हम ज़रूर ख़ुदग़र्ज़ हैं। ठहरो मोहनलाल, ज़्यादा ज़हर फलने से पहले इस काले नाग का फन कुचलना होगा। मैं भी आता हूँ।

[मीर मदन भी चला जाता है। मंच पर कुछ क्षण शांति रहती है। खिड़की की जाली के पार का प्रकाश कुछ तीव्र होता है, जैसे चंद्रमा कुछ और ऊपर चढ़ आया हो। सामने का प्रकाश किंचित् मंद पड़ता है। एक ओर से मीरन आकर कहता है—"नवाब मंसूरुल मुल्क सिराजुद्दौला शाह कुलीख़ाँ मिर्ज़ा मुहम्मद हैबतजंग बहादुर। हाः हाः हाः हाः, लेकिन कितने दिनों तक? अब तुम्हारे दिन गिने हुए हैं सिराज। मीरन को तुम नहीं जानते।" अट्टहास करता हुआ चला जाता है। जिस ओर से मीर मदन आदि गए हैं, उसके दूसरी ओर से सिराजुद्दौला का अपनी बेगम लुत्फ़ुन्निसा के कंधे पर हाथ रक्खे प्रवेश। बेगम के हाथों में बड़ा सितार है।]

सिराजुद्दौला—(द्वार के पास ठिठक जाते हैं, जैसे कुछ सोच रहे हों।)

लुत्फ़ुन्निसा—(आगे बढ़कर चौकी के ऊपर पायताने सितार सँभालकर रखती है, फिर सिराज की ओर देखकर वस्त्र ठीक करती है।) ठिठक क्यों गए? आइए न।

सिराजुद्दौला—(आगे बढ़ते हुए) मीरन की यह हँसी तुमने सुनी बेगम?

लुत्फ़ुन्निसा—सुनी क्यों नहीं। लेकिन पावों के नीचे कुचला जाकर भी फूल फूल ही रहता है।

सिराजुद्दौला—(चौकी पर बैठते हुए) हाँ, लेकिन उसकी रंगत मिट जाती है लुत्फ़ ! ख़ुशबू उसका साथ छोड़ देती है। धूल में सनी हुई उसकी जवानी राह में पड़ी सिसकती रहती है। उसकी हालत पर रुककर आँसू बहाने कोई नहीं जाता।

[सिर झुका लेते हैं।]

लुत्फ़ुन्निसा—(ज़मीन पर बैठकर सिराज के घुटनों पर सिर रख देती है।) मैं कमज़ोर औरत हूँ। जंग की बातें नहीं जानती। हिंदोस्तान की धरती ने मुझे पति के क़दमों में मर जाना सिखाया है मेरे आक़ा। मैं तो आपकी उदास ज़िंदगी में महज़ हँसी बिखेर सकती हूँ, आँसुओं से आपका सारा दुख-दरद·····(रोने लगती है।)

सिराजुद्दौला—(बेगम का मुँह ऊपर उठाकर आँचल से आँसू पोंछते हुए) नहीं बेगम, तुम्हारे आँसुओं की चार बूँदें भी मुझे दरिया बनकर डुबो देंगी। मुझे तुम्हारी हँसी चाहिए, वह हँसी जिसमें सिराज के ज़िंदगी की सारी कड़ुवाहट खो जाय। तुम हँसो बेगम। खिल-खिलाकर हँसो, ताकि उस खिलखिलाहट के शोर में लोगों की चीख़ और कराह मेरे कानों तक न पहुँचे। उन मा-बहनों की चिल्लाहट मैं न सुन सकूँ, जिनकी माँग का

सुहाग फिरंगी की संगीनें पोंछ रही हैं। ऐसी हँसी हँसो लुत्फ़ुन्निसा, जिसमें दुधमुँहे बच्चों की पुकार डूब जाय। ओह, मैं पागल हो जाऊँगा बेगम। किसी को मुँह दिखाने क़ाबिल न रहूँगा।

[दीवार पर टँगी तलवारों को देखने लगते हैं।]

लुत्फ़ुन्निसा—यह कैसी बातें करते हैं आप ? दुनिया अभी इतनी बेवफ़ा नहीं हुई है। जिसने अपनी जवानी और ज़िंदगी देश के क़दमों पर चढ़ा दी, उसे आज नहीं तो कल, दुनिया पूजा के आसन पर बिठाएगी। सिराज को दुनिया उस दिन याद करेगी, जिस दिन हिंदोस्तान फिरंगियों से आज़ाद होगा। वह दिन कैसा होगा मेरे आक़ा ?

सिराजुद्दौला—वह दिन कभी आएगा लुत्फ़ ? वह दिन कभी आएगा, जब लोग तलवारें फेककर हाथों में फूल उठा लेंगे ? जब दुश्मनी के हाथ कटकर गिर जायँगे और दोस्ती मुस्किराएगी ? जब ग़ुलामी एक भूली हुई याद बनकर रह जायगी और आज़ादी के राग चारों ओर गूँजते होंगे ? वह दिन कब आएगा लुत्फ़ ?

लुत्फ़ुन्निसा—आएगा, आएगा मेरे आक़ा। उसी दिन के इंतज़ार में वतन की धरती अपने सीने पर फिरंगी

का पागल नाच सह रहा है। मैं नाचीज़ हूँ। बड़ी-बड़ी बातें न समझती हूँ न समझना चाहती हूँ। पर इतना जानती हूँ कि तोप और संगीन का राज हमेशा नहीं रहेगा। राज होगा दया का, दोस्ती का, मुहब्बत का।

सिराजुद्दौला—लुत्फ़। (पास जाकर) यह सब तुम्हारे मुँह की बात है लुत्फ़ ?

लुत्फ़ुन्निसा—नहीं। (सिराज के पाँवों पर हाथ रखकर) यह सब मैंने इन क़दमों में बैठकर सीखा है। कलकत्ते की अँगरेज़ी कोठी में जिस दिन आपने क़ैद करके भी उन ज़ालिम फिरंगियों को मुआफ़ कर दिया, उस दिन मैं आपकी ऊँचाई समझ सकी।

सिराजुद्दौला—(बेगम को उठाकर पास बिठाते हैं, फिर उसका एक हाथ अपने हाथ में लेकर) मुझसे हुआ नहीं बेगम। मेरे सामने दरबार में वह योरोपियन अफ़सर बँधे खड़े थे। मैं सज़ा सुनाने जा रहा था कि एकाएक कुछ फिरंगी मेमें आकर खड़ी हो गईं। उनकी गोदियों में दूध-पीते बच्चे थे और आँखों में आँसू। उन अफ़सरों में कोई उनका भाई था, कोई शौहर, कोई बाप था। किसी के साथ किसी की मंगनी हो चुकी थी। बच्चों को आगे कर वह जाने क्या-क्या कहने लगीं। मैं उनकी

ज़ुबान पूरी तरह नहीं समझ सका, पर आँसुओं की भाषा समझ गया लुत्फ़। सज़ा के लिये उठे हुए हाथ आप-से-आप गिर गए। और मैं क्या करता, तुम्हीं बताओ ?

लुत्फ़ुन्निसा—आपने जो किया, वह और कोई कर भी कैसे सकता था ? इतना बड़ा दिल और किसके पास है ?

सिराजुद्दौला—दिल की बात नहीं है लुत्फ़ुन्निसा। मैं पत्थर नहीं हूँ। उन आँसुओं को देखकर पत्थर भी पसीज जाता। मेरी लड़ाई फिरंगी की तलवार से है, उसके आँसू से नहीं। जो प्यार और जो बेबसी अपने बाप, भाई और शौहर के लिये उनके आँसुओं में छलक रही थी, उसकी ओर से आँखें बंद कर लेता ? तुम समझती हो कि मैं ऐसा कर पाता ?

लुत्फ़ुन्निसा—आप नहीं कर सकते थे, यह मैं जानती हूँ।

सिराजुद्दौला—मैं भूल गया कि सामने खड़े उस योरोपियन बाप ने कलकत्ते में कितने बच्चों को अपने बापों से जुदा कर दिया है। उस योरोपियन भाई ने हमारी कितनी बहनों से उनके भाई हमेशा के लिये छीन

लिए हैं, और उस फिरंगी शौहर ने हमारी कितनी बेटियों की माँग का सुहाग ख़ून से धो डाला है। सब कुछ भूल गया बेगम, मुझे ऐसा लगा कि ख़ून का बदला ख़ून नहीं है। जान लेकर गई हुई जान वापस नहीं की जा सकती। उन डर से काँपती फिरंगी औरतों के चेहरे मुझे तुम्हारे चेहरे से मिलते-जुलते लगे, जैसे तुम ख़ुद अपने सिराज के प्राणों की भीख माँग रही हो। गोद के उन बच्चों में मुझे अपनी प्यारी उम्मत ज़हूरा नज़र आई। मैंने फिरंगियों को छोड़ दिया बेगम।

लुत्फ़ुन्निसा—उन्होंने तो हुज़ूर से मद्रास जाने की इजाज़त माँगी थी न ? अपने साथियों के पास।

सिराजुद्दौला—हाँ, लेकिन वह भी उनका धोखा था। वह फल्ता जाकर ठहरे और मद्रास की फिरंगी कोठी से फ़ौज बुलाने की कोशिशें करते रहे। मैंने मानिक-चंद को कलकत्ते का हाकिम बनाया, पर फिरंगियों ने उसे तोड़ लिया। वाट्सन और क्लाइव ने इक्कीस सौ सिपाही लेकर कलकत्ते पर फिर हमला किया।

लुत्फ़ुन्निसा—और उसी राजा मानिकचंद ने क़िले के फाटक फिरंगी के लिये खोल दिए। कितना बड़ा धोखा था। कितनी बड़ी ग़द्दारी थी !

सिराजुद्दौला—(उठकर टहलते हुए) किसी का क़ुसूर नहीं है बेगम। इस वक़्त सिराज की क़िस्मत ही उसे धोखा दे रही है। देश के बुरे दिन ही उसके साथ ग़द्दारी कर रहे हैं। फिरंगी आँधी की तरह बढ़ता जा रहा है और तुम्हारा सिराज अकेले अपने कमज़ोर हाथों से उस आँधी को रोक रहा है। अमन और चैन बड़ी चीज़ें हैं बेगम, पर आज़ादी उससे भी बड़ी चीज़ है। उसकी क़ीमत सिराज चुकाना जानता है।

लुत्फ़ुन्निसा—फिरंगी के आगे घुटने टेकने से पहले तो मर जाना ही बेहतर होगा मेरे आक़ा। जिसने हमारी हरी-भरी धरती में आग लगाई, जो आज़ादी का दुश्मन है, जो हमारी मा-बहनों और बच्चों को दर-दर का भिखारी बनाकर छोड़ देना चाहता है, उससे ज़िंदगी की आख़िरी साँस तक हमारी लड़ाई रहेगी—आख़िरी साँस तक। उससे भीख माँगकर उसकी दया पर जीना.....छि: ! आप ऐसा कर सकेंगे ?

सिराजुद्दौला—नहीं, नहीं कर सकूँगा। घर और बाहर, सब ओर आग लगी हुई है, और मैं उसे बुझाने की कोशिश में जान होम दूँगा। मैं कायर नहीं हूँ, मेरी तलवार में अभी ज़ंग नहीं लगा, लेकिन करूँ क्या ? जब-

जब वह दुश्मन पर बिजली बनकर टूटना चाहती है, मेरे अपने आदमी मेरा हाथ पकड़कर पीछे खींच लेते हैं।

लुत्फ़ुन्निसा—तो इससे क्या हुआ ? इतने से ही क्या अपना देश बिक जायगा ? वतन की हज़ार-हज़ार लुत्फ़ुन्निसाओं का सुहाग उजड़ जायगा ? अनगिनत उम्मत ज़हूराओं के गले पर छुरियाँ फिरते अपनी आँखों से हम देखेंगे ? ऐसा नहीं हो सकता मेरे आक़ा। (सिराज के पास जाकर उनके सीने पर टिककर) मुझे आप पर नाज़ है और इस नाज़ की इज़्ज़त रखना आपके हाथ है।

सिराजुद्दौला—(बेगम को बाहुओं में लगभग भरकर) लुत्फ़ ! ऐसा न कहो लुत्फ़। वतन की एक भी बहन का सुहाग अगर सिराज के मिटने से बचता है, तो वह इसके लिये तैयार है। तुमने उम्मतज़हूरा का नाम लिया लुत्फ़। वह मेरी बच्ची, मेरी आँखों का तारा। हिंदोस्तान का हर बच्चा मेरे लिये उम्मतज़हूरा है लुत्फ़। उसके गले पर छुरी फेरनेवाले फिरंगी को सिराज कभी मुआफ़ नहीं कर सकता, कभी मुआफ़ नहीं कर सकता। सिराजुद्दौला का नाम दुनिया के पर्दे से मिट जाय, उसकी ज़िंदगी का टिमटिमाता दिया बुझ जाय, पर

बुझते-बुझते वह प्यारे वतन हिंदोस्तान को कभी न बुझनेवाली एक रोशनी दे जायगा।

[एक दास हुक्का लिए आता है, और अदब से चौकी के पास रख देता है। उसी वक़्त नेपथ्य में ग्यारह के घंटे बजने लगते हैं। दास के प्रवेश पर लुत्फ़ुन्निसा सिराज से थोड़ा दूर हट जाती है। सिराज चौकी पर बैठकर निगाली हाथ में ले कुछ सोचने लगते हैं।]

लुत्फ़ुन्निसा—मेहर, पान भी लता आ।

मेहरअली—अभी लाया बेगम साहबा, पर.....

लुत्फ़ुन्निसा—पर क्या रे ?

मेहरअली—रात ज़्यादा गुज़र चुकी है हुज़ूर। अब सोने का वक़्त है।

सिराजुद्दौला—(जैसे चौंककर) लेकिन हिंदोस्तान की काली रात कहाँ गुज़री है मेहर ? अभी सो जाऊँ ? पर तुम ठीक कहते हो, वह तब गुज़रेगी, जब सिराजुद्दौला हमेशा के लिये सो जायगा। लुत्फ़, यह मेहरअली भी मेरे साथ कलकत्ते गया था।

लुत्फ़ुन्निसा—तो तूने भी वह क़त्लेआम अपनी आँखों देखा मेहर ? कैसा लगता है वह सब ?

मेहरअली—हुज़ूर, मेरे सामने तो अमीचंद के हिंदोस्तानी जमादार की तसवीर खड़ी है। फिरंगी ने अमीचंद,

उसके साले हज़ारीमल और दीवान राजवल्लभ के बेटे किसनदास को क़ैद कर लिया। हज़ारीमल मरने-मारने पर उतारू हो गया। लड़ते-लड़ते उसका बायाँ हाथ उड़ गया। फिरंगी सिपाही अमीचंद के ज़नानख़ाने की ओर बढ़े। जमादार से यह दखा न गया बेगम साहबा, घर में बंद तेरह औरतों की लाज बचाने के लिये उसने घर में आग लगा दी और ख़ुद भी छुरा मारकर मर गया।

सिराजुद्दौला—यह सब क़ुर्बानियाँ अकारथ नहीं जायँगी मेहर। हिंदोस्तान में सब अमीचंद, राजवल्लभ, शौक़तजंग और मीर जाफ़र नहीं हैं। अभी प्यारा वतन इतना ग़रीब नहीं हुआ है। अभी उसकी झोली में मोहनलाल, मीर मदन, अमीचंद का वह जमादार और हमारे मेहरअली-जैसे रतन भी हैं। तू जा मेहर, पान ले आ और मीर मदन को यहाँ भेज दे। कहना, वाट्सन को ख़त भेजा न हो, तो लेते आएँ।

[आदर से सिर झुकाकर मेहरअली चला जाता है। सिराजुद्दौला सितार उठाकर अनमने भाव से तारों पर उँगलियाँ फेरने लगते हैं, धीरे-धीरे राग सोहनी या जैजैवंती उभरता है। बेगम चुपचाप सिराज के घुटनों पर सिर टेके आँखें मूँदे बैठी हैं। कुछ ही क्षण बजाकर सिराज सितार धर देते और बेचैनी से उठकर टहलने लगते हैं।]

सिराजुद्दौला—मीर मदन अभी नहीं आए बेगम।

लुत्फ़ुन्निसा—सुरों के झूले पर झूलती हुई मैं बादलों में दूर, बहुत दूर चली गई थी, पर एक झटके से फिर धरती पर आ गई। यह उँगलियाँ क्या तलवार पकड़ने के लिये बनी हैं मेरे आक़ा ?

मेहरअली—(प्रवेश कर पानों की तश्तरी सिराज के पास ले जाता है।) सिपहसालार मीर मदन साहब हाज़िर होने की इजाज़त चाहते हैं हुज़ूर।

सिराजुद्दौला—इजाज़त है।

[मेहरअली जाता है।]

लुत्फ़ुन्निसा—तख़लिया चाहिए तो मैं फिर आ जाऊँ ?

सिराजुद्दौला—(आकर चौकी पर फिर बैठ जाते हैं।) कैसी बातें करती हो बेगम ? सिराज के पास तुमसे छिपाने के लिये क्या है ?

[मीर मदन का प्रवेश, हाथ में एक मुड़ा हुआ काग़ज़ है।]

सिराजुद्दौला—फिरंगी सिपहसालार वाट्सन को ख़त भेज दिया मीर मदन ?

मीर मदन—जा रहा है हुज़ूर।

सिराजुद्दौला—ज़रा उसे एक बार पढ़ो तो।

[मीर मदन ख़त पढ़ता है, सिराज हुक्के की निगाली से खेलते रहते हैं।]

मीर मदन—(पढ़ते हुए) तुम लोगों ने हुगली का नगर ले लिया, उसे लूटा और मेरी प्रजा से लड़े। सौदागरों को ऐसे काम नहीं करने चाहिए। अगर तुम चाहते हो कि कंपनी का कारबार पहले की तरह जम जाय, और कंपनी की तिजारत चलने लगे, तो किसी मोतबर आदमी को मेरे पास भेज दो, जो तुम लोगों की मंशा और ज़रूरतें मुझे बता सके और मुझसे बात कर सके। जो अँगरेज़ इन सूबों में बसे हुए हैं, वे अगर व्यापारियों का-सा बर्ताव करेंगे, मेरा हुक्म मानकर चलेंगे और मुझे किसी तरह तंग न करेंगे, तो मैं उनके नुक़सानों का ख़याल रक्खूँगा।

सिराजुद्दौला—(कुछ क्षण बाद) इसमें इतना और जोड़ देना मीर मदन कि जंग में सिपाहियों को लूट से रोकना बड़ा मुश्किल काम है, फिर भी अगर मेरी सेना की लूट से उनका कुछ नुक़सान हुआ हो, तो.....

[तेज़ी से मोहनलाल का प्रवेश।]

मोहनलाल—तो आप उसे भी पूरा कर देंगे, यही न ? मेरी एक विनती है हुज़ूर। फिरंगी के सामने हर क़दम पर इस तरह झुकने की बजाय क्या यह अच्छा न

हिन्दुस्तानी एकेडमी, उ० प्र० (४८६५) (पुस्तकालय)

[illegible]खा कि हम [illegible] होकर निकल जायें ? बंगाल को [illegible] मरने के लिये छोड़ दें ?

मीर मदन——मैं भी यही कहनेवाला था। ऐसे ख़तों से फिरंगी की ताक़त और बढ़ेगी। उसका जो कुछ नुक़सान हुआ हो, उसकी शरारतों से हुआ। आप उसका मुआवज़ा क्यों देंगे ?

सिराजुद्दौला——तुम क्या कहती हो बेगम ? ना, ना, इनके सामने कैसा पर्दा ? ग़ुलामी से लड़ोगी मुँह पर घूँघट लेकर ? मैं तुम्हारी राय जानना चाहता हूँ।

लुत्फ़ुन्निसा——मेरी राय ? वह आपकी मर्ज़ी से अलग कैसे होगी हुज़ूर ? पर मुझे इन लोगों की बात सही लगती है। फिरंगी का नुक़सान भरना हमारा काम नहीं है।

सिराजुद्दौला——(खड़े होकर टहलने लगते हैं।) मुझे अफ़सोस है कि मरी राय तुम लोगों से मेल नहीं खाती। फिरंगी कुछ भी समझें, इस देश में वह हमारे शरण में हैं। मुक़ाबले की जंग में हम उनके सीनों पर गोलियाँ चला सकते हैं, उनके पेट पर लात मारना हमारा फ़र्ज़ नहीं। हमारी फ़ौज ने अगर उनका रुपया-पैसा लूटा है, तो हम उसे पूरा करने की कोशिश करेंगे। यह फिरंगी के आगे झुकना नहीं है मोहनलाल।

मोहनलाल—तो फिर, सुलह के लिये फिरंगी की चारों शर्तें आप मानते हैं हुज़ूर ?

सिराजुद्दौला—नहीं, चौथी शर्त किसी तरह नहीं मानी जा सकती मोहनलाल। उनका नुक़सान दे रहा हूँ, उनको दी हुई रियायतें लौटा रहा हूँ। वह अपने आबादियों की क़िलेबंदी भी कर लें, पर कलकत्ते में कंपनी को टकसाल क़ायम करने की इजाज़त मैं नहीं दे सकता।

मीर मदन—तो फिर फिरंगी सुलह की शर्तों को तय करने के लिये आपको कलकत्ता क्यों ले जाना चाहते हैं ? यहाँ ही वह सब कुछ क्यों नहीं तय कर लेते ? मुझे तो इसमें भी धोखा ही लगता है हुज़ूर।

सिराजुद्दौला—(चौकी पर बैठते हुए) धोखा कहाँ नहीं है मीर मदन ? फिरंगी कुछ भी हो, है तो परदेसी ही, अपने आदमियों की जिन सारी बातों पर अमल करता हूँ, उनमें कितना धोखा है, यह क्या मैं नहीं जानता ? आस्तीन में कितने साँप पल रहे हैं, यह मुझे मालूम है।

[अमीना बेगम, मीर जाफ़र और मीरन का प्रवेश। इन्हें देखकर लुत्फ़ुन्निसा उठकर खिड़की के पास चली जाती है। सिराजुद्दौला बैठे ही रहते हैं और एक उड़ती नज़र मीर जाफ़र पर डाल लेते हैं।]

सिराजुद्दौला—आओ मा। अभी सोई नहीं ?

अमीना—किन साँपों की बात कर रहे थे बेटा ?

(चौकी पर पास बैठ जाती हैं।)

सिराजुद्दौला—एक दो हैं मा ? समूचा देश आज उनके ज़हर से काला हो रहा है। बंगाल के हर घर में आज एक काला नाग फन उठाए फुफकार रहा है। नवाब अलीवर्दीखाँ का यह महल भी उन नागों के ज़हर से अछूता नहीं है मा !

अमीना—(झट से सिराज को सीने से चिपका लेती और माथा चूम लेती है।) यह तूने क्या कहा मेरे बेटे ! मेरे लाल, तुझे इतना दुख है और तेरी मा बेख़बर है। मुझे बता। मुझसे कह न सिराज, अगर जान देकर भी तेरी बलाएँ दूर कर सकूँ।

सिराजुद्दौला—नहीं कर सकोगी मा ! अमन-ईमान के दुश्मन वे काले-काले साँप तुम्हारे साए में ही तो पल रहे हैं। तुम्हारा शह पाकर ही वह मेरी प्रजा में फूट और भेद का पौधा लगा रहे हैं और मैं चुपचाप वह ज़हर का पेड़ बढ़ते देख रहा हूँ। तुम्हारी इज़्ज़त ने मेरे हाथ बाँध रक्खे हैं और गला दबाकर मेरे मुँह में वह ज़हर उँड़ेला जा रहा है मा !

अमीना—कहता क्या है सिराज ? मेरी शह से तेरी प्रजा में फूट फैलाई जा रही है ? मैं ख़ुद ही अपने बेटे की ज़िंदगी में ज़हर फैला रही हूँ ? यह तू कैसी पहेलियों में बात कर रहा है मेरे लाल ?

मीर जाफ़र—(उत्तेजित होकर) यह पहेली नहीं है अमीना ! अपने बेटे की मुहब्बत में तुम न समझो तो न सही, पर इतना साफ़ इशारा मैं भी न समझ सकूँ, इतना बड़ा बेवक़ूफ़ नहीं हूँ ।

मीरन—यह इशारा अब्बा की ओर है बड़ी मा ! सिराजुद्दौला को अब्बा पर शक है ।

अमीना—यह सच है सिराज ? तुझे अपने नाना मीर जाफ़र पर शक है ? अब्बाजान जिसकी इतनी इज़्ज़त करते थे और जिहोंने बचपन में तुझे गोदियों खिलाकर बड़ा किया, वही आज तेरे ख़िलाफ़ साज़िश करेगा ? यह सुनने के पहले मैं मर क्यों नहीं गई ख़ुदा !

[सिराज उठकर दीवार के पास जाते हैं और सबसे अच्छी तलवार उतारने लगते हैं ।]

मीर जाफ़र—मैंने तुमसे कहा नहीं था अमीना, गद्दी पाकर सिराज सब कुछ भूल गया है । अब वह पहले का सिराज नहीं, जो अलीवर्दी के मरने पर मेरे दामन में

मुँह छिपाकर रो पड़ा था। नवाबी मसनद के चारो ओर दुम हिलाते चापलूस कुत्तों ने उसे अपनों से बेगाना कर दिया है। मीर मदन और मोहनलाल-सरीखे.....

सिराजुद्दौला—(चीख़कर) नाना, मेरा मुँह न खुलवाओ। अपने को पाक-साफ़ साबित करने की कोशिश में दूसरों पर कीचड़ न उछालो। ख़ुद को बेगुनाह बताने के लिये बेगुनाह को गुनहगार न कहो। मा, बहुत हो चुका। मैं तुम्हारे सामने ही सवाल करता हूँ। नाना, अमीचंद ने जो सौदा फ़िरंगियों से किया, उसमें तुम्हारा हाथ नहीं था? स्वरूपचंद और महताबचंद ने हमारी ज़रूरत के वक़्त अपनी थैलियों का मुँह जो बंद कर लिया, वह क्या तुम नहीं जानते थे? वाल्स और स्क्रैफ़्टन फ़िरंगी जासूस होते हुए भी वकील बनकर मेरे पास आए, यह क्या तुम्हें नहीं मालूम था? घसीटी बेगम की साज़िश में तुम नहीं शामिल थे? और कुछ पूछूँ? है तुम्हारे पास जवाब?

[मीरन जल्दी से अपनी तलवार निकाल और सिराजुद्दौला की ओर बढ़ता है। खिड़की के पास से लुत्फ़ुन्निसा देखती है और झपटकर मीरन और सिराज के बीच में आ जाती है। उसी क्षण सिराजुद्दौला मीरन का उठा हुआ हाथ पकड़ लेता

है। यह सब एक क्षण में हो जाता है। अमीना चीख़कर मुँह ढाँप लेती है।]

सिराजुद्दौला—(मीरन का हाथ झटककर) म्यान में रक्खो मीरन। मेरे हाथ ख़ून से न रँगवाओ। आगे कभी इसकी ज़रूरत पड़ेगी। बल्कि मुहम्मदबेग को यही तलवार देना। मेरे गले पर तलवार चलाकर वह बदला पूरा-पूरा चुका देगा। मा, मिल गया तुम्हारे सवाल का जवाब ?

अमीना—(पास बैठ गई लुत्फ़ुन्निसा के सिर पर हाथ फेरते हुए) यह मैं क्या देख रही थी बेटी ? मुझे तो सपने में भी ख़याल न था कि मेरे लाल के ख़िलाफ़ अपने घर में ही इतनी बड़ी साज़िश हो रही है ! मैं तो समझती थी कि सिराज के पसीने पर अपना ख़ून बहानेवालों की कमी नहीं है, पर देखती हूँ कि यहाँ तो सब उलटे उसके ख़ून के प्यासे हो रहे हैं।

लुत्फ़ुन्निसा—(अमीना के घुटने हिलाकर) पूछो न मा, यह मुहम्मद बेग कौन है।

मीर मदन—यह मुझसे पूछिए बेगम साहबा। मुहम्मद बेग को नवाब अलीवर्दीख़ाँ साहब ने लड़के की तरह पाला था। इसी महल में हमारे नवाब सिराजुद्दौला

साहब के साथ खेलकर वह बड़ा हुआ। आज वह नवाबी ख़ज़ाने के जवाहरातों की लालच में अपने उन्हीं बचपन के साथी नवाब सिराजुद्दौला की जान लेने पर उतारू है।

अमीना---या ख़ुदा! इंसान इतना नीचे गिर सकता है?

मोहनलाल---और इस काम के लिये मुहम्मद बेग को छिपे-छिपे तैयार कर रहे हैं लायक़ बाप के लायक़ बेटे मीरन। कहिए मीरजाफ़र साहब, यह भी झूठ है?

लुत्फ़ुन्निसा---(सिराज के पास जाकर) छोड़ दो न मेरे आक़ा यह सब। अपनी लुत्फ़ुन्निसा और उम्मत को लेकर चले चलो कहीं दूर, जहाँ छल और फ़रेब का राज न हो, जहाँ लालच के साए में इंसान शैतान की पूजा न करता हो, जहाँ आदमी की जान की क़ीमत सोने-चाँदी और हीरे-जवाहरातों से न चुकाई जाती हो। इस मतलबी दुनिया में हमारा दम घुट जायगा।

सिराजुद्दौला---(लुत्फ़ुन्निसा का सिर थपथपाकर) मुझे कमज़ोर न बनाओ बेगम। वह जगह दुनिया के पर्दे पर है कहाँ, जहाँ इंसान ग़ज़ में बावला बना न फिरता हो? भाग कर जाऊँगा कहाँ? सब कुछ छोडकर, मुँह मे

कालिख पोतकर भाग जानेवाले सिराज को कोई क्यों पनाह देगा ?

अमीना—मैं दूँगी बेटा। अपने सिराज के लिये मेरी गोद में अब भी जगह है। मेरे आँचल में अब भी दूध है अपने लाल के लिये। (हाथ फैलाकर) आ न बेटा, तुझे इस मतलबी दुनिया के नज़रों की ओट करने के लिये मेरे दामन में अब भी कपड़े की कमी नहीं।

सिराजुद्दौला—(मुस्किराकर) बस मा ? सिराज ही तुम्हारा बेटा है ? उसकी जान ही तुम्हें इतनी प्यारी है ? आज देश के लाखों-करोड़ों बेटे ज़ुल्म और शैतानियत के शिकार बने तड़प रहे हैं। उन्हें भी तुम्हारे दामन की छाँह चाहिए मा ! उन्हें भी तुम्हारी आँखों के आँसू चाहिए। (सिर झुकाए बैठी लुत्फ़ुन्निसा को उठाते हुए) उठो लुत्फ़ ! तुम्हारा सिराज सोने-चाँदी और हीरे-जवाहरात के लालच में बंगाल की नवाबी मसनद पर नहीं बैठा है। यह सब बंगाल के प्रजा की अमानत है, और सिराज जान देकर भी इन्हें लुटने से बचाएगा। (मीर जाफ़र से) नाना, मीर मदन और मोहनलाल चापलूस कुत्ते नहीं। वह फ़िरंगी लुटेरों का सामना करनेवाले सिराज के बाएँ और दाएँ हाथ हैं।

[सिराजुद्दौला, मीर मदन और मोहनलाल के कंधों पर हाथ रखते हैं। अमीना स्तंभित-सी चौकी पर बैठी है और लुत्फ़ुन्निसा उनके पायताने हैं। मीरन का चेहरा तमतमाया है और मीर जाफ़र अपनी कमर से तलवार खोलकर सिराजुद्दौला के पैर के पास रख देता है। नेपथ्य में वाद्य-यंत्रों पर किसी राग का झाला बज उठता है।]

मीर जाफ़र--सिपहसालारी का निशान यह तलवार मुझे नवाब अलीवर्दीख़ाँ ने दी थी। ग़द्दार और ख़ुदग़र्ज़ मीर जाफ़र के हाथों इसकी तौहीन होगी। उठा लो तलवार सिराज।

[सिराजुद्दौला झुककर तलवार उठाने लगते हैं, तभी मीरन झपटकर उसे छीन लेता है।]

मीर जाफ़र--(चौंककर) मीरन !

मीरन--यह नहीं हो सकता अब्बा। आपके जीते जी बंगाल का बड़ा सिपहसालार दूसरा नहीं हो सकता। सिराज के हाथों आपकी इतनी बड़ी बेइज़्ज़ती हो और मीरन चुपचाप देखता रहे ! तुफ़् है उसे।

मीर जाफ़र--नहीं मीरन, लौटा दो उसे। सिपहसालारी के रुतबे का असली हक़दार जो होगा, यह तलवार उसी के हाथों में जंब देगी। मुझे सिपहसालारी

प्यारी नहीं है, बूढ़ा हुआ, अब मुझसे काम भी नहीं होता। लेकिन सिराज का भरोसा खोकर मैं रहना नहीं चाहता बेटा। अच्छा यही है कि अपनी बुज़ुर्गी की लाज बचाने के लिये इस दरबार को आख़िरी सलाम कर लूँ। चलो मीरन।

[मीरन को कुछ संकेत करता है, जो वही समझ पाता है। दोनो जाने के लिये मुड़कर एक ओर बढ़ते हैं। जाते-जाते मीरन घृणा से तलवार चौकी पर एक ओर फेंक देता है। सिराज चौकी पर बैठ गए हैं और तलवार हाथ से उठा लेते हैं। अमीना एकदम विचलित हो उठती है।]

अमीना—(जाते हुए मीर जाफ़र को पुकारकर) ठहरो। रुक जाओ मीरन। (दोनो ठहरते हैं) तुम सिराज को मुसीबत के वक़्त ऐसे छोड़कर नहीं जा सकते। (मीर जाफ़र के पास जाकर) सिराज अभी बच्चा है। उसने अभी दुनिया का कुछ देखा नहीं है। उसका पागलपन बुज़ुर्ग होकर तुम न माफ़ करोगे, तो और कौन करेगा?

मीर जाफ़र—(व्यंग्य से सिराज की ओर देखकर) लेकिन इनके बाएँ और दाएँ हाथ काफ़ी मज़बूत हैं अमीना, उनके आगे इस बूढ़े की क्या वक़त है।

लुत्फ़ुन्निसा—रोक लो न उन्हें। दो और दो मिल-

कर चार होते हैं मेरे आक़ा। इस वक़्त तुम्हें ज़्यादा-से-ज़्यादा हाथों की ज़रूरत है, जिनके साए में तुम आज़ादी की मंज़िल तक पहुँच सको।

अमीना—(पास जाकर) सिराज बेटा, इस बार और अपनी मा की बात मान ले ; रोक ले अपने नाना को। (रोने लगती है।)

सिराजुद्दौला—(अमीना को बाहों में भरकर) कैसी बातें करती हो मा ! ये आँसू बंद करो। सिराज आग में कूद सकता है पर तुम लोगों की आँखों में आँसू वह नहीं देख सकता। उसे पागल न बनाओ। (मीर जाफ़र के पास जाकर तलवार देता है।) नाना, मैंने इसे नहीं लौटाया था। बुज़ुर्गों के हाथों मौत भी आए, तो सिराज ख़ुशी से उसे गले लगाएगा। (स्वर एकदम करुण हो जाता है और खिड़की के पास चले जाते हैं।) आदमीयत बहुत बड़ी चीज़ है नाना और सिराज आदमी बनकर ज़िंदा रहना चाहता है। ले लो तुम लोग यह सब, मुझे नहीं चाहिए राज-पाट, धन दौलत, ताज-तख़्त। मुझे अपने लिये यह सब कुछ नहीं चाहिए। मुझे चाहिए प्यार, मुझे चाहिए मुहब्बत और इंसानियत। देश और बंगाल की धरती आज़ाद साँस ले सके, ऐसा कुछ करो तुम

लोग। सिराज के लिये इससे बढ़कर खुशदिन और कौन होगा ?

[मीर जाफ़र और मीरन के मुखों पर प्रसन्नता परिलक्षित होती है। मीर जाफ़र सिराजुद्दौला के पास जाता है।]

मीर जाफ़र—खुदा तुम्हें कामयाब करेगा सिराज। बुज़ुर्गों की दुआ बेकार नहीं जायगी। (पास रक्खे हुए कुरान को उठाकर) क़ुरानपाक की क़सम खाकर कहता हूँ बेटा, आज़ादी के जंग में तुम इस बूढ़े मीर जाफ़र को हमेशा अपने साथ पाओगे। चलो अमीना, तुमसे एक ज़रूरी काम है। आओ मीरन।

[जल्दी से एक ओर निकल जाता है, जैसे रुकने से धोखा खुल जायगा। पीछे-पीछे मीरन जाता है।]

अमीना—आज मैं कितनी खुश हूँ। खुदा तुझे सलामत रक्खे मेरे लाल। बेटी, सिराज को सोने को कह। मैं जाती हूँ। (प्रस्थान।)

मीर मदन—अच्छा तमाशा हुआ मोहनलाल। हम चले थे काले नाग का फन कुचलने। वह तो और कुंडली मारकर जम गया। हुज़ूर नवाब साहब का इरादा कलकत्ते जाने का है या नहीं ?

सिराजुद्दौला—है मीर मदन। फ़िरंगी से डरकर नहीं, उसके जाल को तोड़ने के लिये।

मोहनलाल—यह जानते हुए कि हुज़ूर के ठहरने का इंतज़ाम फ़िरंगी ने अमीचंद के बाग़ में किया है और उसमें धोखा हो सकता है ?

सिराजुद्दौला—इतना ही नहीं मोहनलाल, मैं यह भी जानता हूँ कि फ़िरंगी ने रात के वक़्त मेरे ख़ीमे पर हमला करके मुझे मार डालने का जाल रचा है।

लुत्फ़ुन्निसा—हुज़ूर ! आप कलकत्ते नहीं जायँगे हुज़ूर। जान-बूझकर मैं मौत को गले नहीं लगाने दूँगी। आपको कलकत्ते नहीं जाने दूँगी।

सिराजुद्दौला—(लुत्फ़ुन्निसा का माथा प्यार से सहलाते हुए) अभी वह दिन नहीं आया है बेगम। सिराज की जान परदेशी फ़िरंगी के हाथों नहीं जायगी। सिराज की मौत भी होगी, तो अपने किसी भाई के हाथों होगी। फिर वहाँ तुम तो होगी नहीं लुत्फ़ ! मरने पर तुम्हारी आँखों के दो बूँद आँसू भी मुझे नहीं मिलेंगे। ना, ना बेगम, सिराज की लाश भी गिरेगी तो तुम्हारी गोद में गिरेगी।

[लुत्फ़ुन्निसा मुँह पर आँचल रख कर रो देती है। करुण रागिनी बज उठती है। पर्दा धीरे-धीरे गिरता है।]

दो

[मुर्शिदाबाद के महल में तीन ओर से घिरा हुआ एक आँगन, बाएँ कोने में एक बुर्ज़ी बनी हुई है। बुर्ज़ी के अंदर से मंद प्रकाश बाहर निकल रहा है। बुर्ज़ी और तीनों ओर की दीवारें लाल ईंटों की बनी हुई हैं। दोनों पार्श्व की दीवारों में एक-एक द्वार भी है। बुर्ज़ी के गोलाकार दीवार में यत्र-तत्र स्थान बनाकर बड़े-बड़े दीप जलाए गए हैं, जैसे अँधेरा दूर करने का निष्फल प्रयास हुआ हो। पर्यावरण में एक दर्द और घुटन व्याप्त है, जिसके बढ़ने में नेपथ्य में पुरुष-कंठ का निम्न-लिखित गीत सहायक होता है। बीच की और दाईं ओर दीवारों से लगे हुए वैसे ही लाल पत्थर के छोटे-छोटे चबूतरे बने हुए हैं, जो बैठने के काम आएँ। बीच की दीवार के पीछे रास्ता है।]

राग मालकोस—एक ताल (मध्यलय)

रब कब सुमरेगो, अमर न कोई या जग में।
काल अचानक पल में दम को हरेगो। रब·····

सुत, दारा, संसारा क्या साथ चलेगो ?
चतुर कहत अवधि बितत पछतावेगो । रब.....

[पर्दा धीरे-धीरे हटता है और गीत अभी गूँज रहा है। बुर्ज़ के ऊपर खड़ा मीरन पीछे की ओर कुछ देख रहा है। वस्त्रसज्जा पहले दृश्य से कुछ अधिक भड़कीली है। दाईं ओरवाले चबूतरे पर मुहम्मद बेग चिंतातुर बैठा है।]

मीरन—(बुर्ज़ के ऊपर से ही झाँककर) प्रजा की यह दीवाली देख रहे हो मुहम्मद बेग ? तीन दिन अब्बा को गद्दी पर बैठे हो गए पर लोगों की ख़ुशी अभी जवान है।

मुहम्मद बेग—(केवल एक बार मीरन की ओर देख लेता है।)

मीरन—(बुर्ज़ से नीचे उतर आता है।) लोगों के ये ख़ुश चेहरे सल्तनत की ख़ुशहाली के सुबूत हैं। दिल्ली-दरबार के मातहत नवाब अलीवर्दी ने जब नवाबी चलाई, तभी प्रजा के दिल की ख़ुशी मुरझाने लगी। सिराजुद्दौला के वक़्त वह एकदम सूख गई।

मुहम्मद बेग—अब तुम्हारे अब्बा मीर जाफ़र नवाब बनाए गए हैं और लोगों की ख़ुशी को हरा होने का मौक़ा मिला है। फ़िरंगी की दया के साए में प्रजा के दिलों की मुरझाई कली फिर खिलकर फूल होंगी।

यह जादू हुआ कैसे मीरन ? नवाब सिराजुद्दौला की दिलेरी, उनकी दया, उनकी मुहब्बत, उनका दबदबा, लोग इतनी जल्दी यह सब भूल गए ? मीरन, भरोसा नहीं होता कि यह सच है।

मीरन—(उत्तेजित होकर) अदब से बात करो मुहम्मद बेग। इन तीन दिनों के अंदर तीस बार तुम्हें समझाया कि मैं अब मीरन नहीं, नवाबज़ादा मीरन हूँ। और तुम महल के एक मामूली नौकर हो। मेरी नज़र फिरते ही चींटी की तरह मसल दिए जाओगे।

मुहम्मद बेग—(सिर झुकाकर) बेअदबी मुआफ़ हो हुज़ूर। बहुत दिनों की पड़ी हुई आदत है न। लाख कोशिश करता हूँ, पर गले से नवाबज़ादा निकलना मुश्किल मालूम होता है।

मीरन—(जैसे बात बढ़ाना नहीं चाहता) कोई बात नहीं, धीरे-धीरे आदत पड़ जायगी। ख़याल रक्खा करो। आदमी चाहे तो बड़ी-बड़ी मुश्किलें आसान हो जाती हैं। अब्बा का नवाबी मसनद पाना क्या आसान था मुहम्मद बेग ?

मुहम्मद बेग—आसान नहीं था, तभी तो सपना-सा लगता है। और फिर हुज़ूर, तीन दिन में लोग अगर

नवाब सिराजुद्दौला को आसानी से भूलकर जश्न मना सकते हैं, तो मीर जाफ़र की नवाबी भूलते उन्हें कितनी देर लगेगी ? यह मुश्किल भी तो उनके लिये आसान होगी ?

मीरन—(क्रोध से) तुम्हें हो क्या गया है मुहम्मद बेग ? यह न भूलो कि तुम्हारी ज़िंदगी इस वक़्त मीरन के हाथों में क़ैद है। जो मीरन एक रात में तुम्हें बादशाह बना सकता है, वही तुम्हें मौत के घाट भी उतार सकता है। ज़िंदगी से मत खेलो मुहम्मद बेग !

मुहम्मद बेग—कुछ नहीं भूलता हूँ हुज़ूर। ज़िंदगी से खेलने का बूता होता, तो नवाब सिराजुद्दौला पर हाथ उठाने के पहले ख़ुद ही गला घोटकर मर जाता। जिस नवाब अलीवर्दी ने जीते-जी अपने बच्चे की तरह प्यार, मुहब्बत से पाला, मरने के बाद उनसे दग़ा करता ? जिस नवाब सिराजुद्दौला के साथ इसी आँगन में खेला, धूल के महल बनाए, उनके सीनें में कटार भोंककर अपना मुँह काला करता ?

मीरन—बचपन के धूल के घिरौंदे जब सच करने का तुम्हें मौक़ा दे रहा हूँ, तब तुम्हारे हाथ क्यों काँप रहे हैं ? सोच लो मुहम्मद बेग, एक ओर तुम्हारी और

तुम्हारे ख़ानदान की ज़िंदगी-भर की ख़ुशहाली है, दूसरी ओर महज़ एक अदने से काँटे को उखाड़ फेकना है। एक ओर हीरे-जवाहरातों का अंबार है, दूसरी ओर एक मामूली-सी जान। टिमटिमाते दिए को फूँक मारकर बुझा देने में कोई गुनाह नहीं है मुहम्मद बेग।

मुहम्मद बेग—नहीं हुज़ूर, यह तो बड़े पुण्य का काम है। धन्य भाग्य मुहम्मद बेग का कि हुज़ूर उसे वैकुंठ के रास्ते पर ढकेल रहे हैं। अच्छा, नवाबज़ादा मीरन साहब, यह पुण्य आप ख़ुद क्यों नहीं कमाते ?

मीरन—(एकदम उत्तेजित हो अपनी कटार निकाल लेता है।) मुहम्मद बेग, अपने ख़ून से मेरे हाथ काले न करवाओ। सिराजुद्दौला की जान इतनी क़ीमती नहीं है कि मीरन उसके लिये ज़हमत उठाए। चींटी को कुचलने के लिये कोई हाथी नहीं बाँधता।

(जल्दी से मोहनलाल का प्रवेश।)

मोहनलाल—तब यह कटार म्यान में रख लो मीरन, मुहम्मद बेग चींटी से भी गया गुज़रा है।

मीरन—(कटार यथास्थान खोंसते हुए) ओ: मोहनलाल !

मोहनलाल—(व्यंग्य से) हाँ, मोहनलाल। एक दिन तुम्हारी तलवार मेरे गले को निशाना बनाकर उठ चुकी

है। मीर मदन न होते, तो तुम्हारे रास्ते का यह काँटा उसी दिन दूर हो गया होता।

मीरन——प्लासी की प्यासी धरती मीर मदन के ख़ून से अपनी प्यास बुझा चुकी, अब तुम्हारी बारी है मोहनलाल। हमारी जवाँमर्दी और दिलेरी ने सिराजुद्दौला को मैदान छोड़कर भागने पर मजबूर किया और आज वह अपने घर में ही क़ैद हैं।

मोहनलाल——जवाँमर्दी और दिलेरी? तुम्हें शर्म भी नहीं आती मीरन? तुम जवाँमर्दी और दिलेरी दिखा रहे हो मुल्क को फिरंगी के हाथ बेचने में? अपने घर का मालिक दूसरे को बनाकर तुम ख़ुश हो रहे हो? यह ख़ुशी तुम्हें बहुत महँगी पड़ेगी मीरन!

मीरन——(क्रोध से) ज़ुबान सँभालकर बात करो मोहनलाल। अपने घर के मालिक हम ख़ुद हैं। अब्बाजान आज नवाबी मसनद पर हैं। रियाया ने उन्हें अपना रहनुमा चुना है।

[सहसा नेपथ्य में शोर होने लगता है। 'नवाब सिराजुद्दौला ज़िंदाबाद।' 'नवाब सिराजुद्दौला को हमें वापस दो।' कई बार ये पुकारें सुन पड़ती हैं। मीरन घबराकर बुर्ज़ी के ऊपर चढ़कर देखने के लिये भागता है, तभी एक ओर से तेज़ी से मेहरअली भागता हुआ

आता और मीरन से टकरा जाता है। जब तक मीरन सँभाले, मेहर-अली बुर्ज़ी के द्वार से ऊपर चढ़ जाता है। मेहरअली के मुख पर हर्ष है और वह अविचलित है।]

मोहनलाल—सुन रहे हो मीरन ? प्रजा अपने सच्चे रहनुमा को वापस चाहती है। उसके कंठ से ज़िंदाबाद निकल रहा है सिराजुद्दौला के लिये। मीर जाफ़र का नाम रियाया के गले में अटकता है।

मीरन—(चिल्लाकर) यह नहीं हो सकता। यह नहीं हो सकता। रियाया की यह गुस्ताख़ी मीरन नहीं बर्दाश्त कर सकता। मुहम्मद बेग, दौड़कर बंद करवाओ यह बकवास। ज़रूरत पड़े, तो संगीनें चलवा दो। फिरंगी सिपाही बाहर मौजूद हैं।

मेहरअली—(बुर्ज़ी के ऊपर हर्षातिरेक से नाचते हुए) 'नवाब सिराजुद्दौला ज़िंदाबाद !' कैसी शान है, चाल में कैसी अकड़ ! मशालों की रोशनी में चेहरा पैग़ंबरों-जैसा चमक रहा है। और फ़क़ीरी जामा भी उन पर कैसा खिलता है, जैसे कमल के फूल पर चमकीली धूप।

मीरन—(चीख़कर) चुप रहो मेहरअली। मीरन के ग़ुस्से को चुनौती मत.....

[नेपथ्य में फिर 'नवाब सिराजुद्दौला ज़िंदाबाद' की दो-तीन बार पुकार होती है, और मेहरअली नीचे उतर आता है।]

मीरन—(शोर सुनकर) खड़े क्यों हो मुहम्मद बेग ? कुचलवा दो बाग़ियों का सिर। जाओ। तुम्हारे इनाम की रक़म बढ़ा दी जायगी।

मुहम्मद बेग—(पसोपेश में पड़ा खड़ा रहता है।)

मीरन—जाओ मुहम्मद बेग, वरना मीरन को खुद जाना पड़ेगा। अब्बाजान को भी क्या सूझी कि इस वक़्त सिराजुद्दौला को यहाँ बुलवाया। चलो मुहम्मद बेग, मेरे साथ चलो। मोहनलाल, साँप मरे और लाठी न टूटे, मीरन इसे नहीं मानता। पहले इन बाग़ियों से निपट लूँ, फिर तुमसे समझूँगा।

[तेज़ी से मुहम्मद बेग का हाथ पकड़कर घसीटता हुआ पीछे के रास्ते जाता देख पड़ता है। नेपथ्य में एकाध बार फिर 'नवाब सिराजुद्दौला ज़िंदाबाद' के नारे। मोहनलाल की आँखों में प्रसन्नता की चमक है, वह बीचवाले चबूतरे पर बैठ जाता है।]

मेहरअली—यह मीरन कुछ पागल है क्या हुजूर ?

मोहनलाल—नहीं मेहर, वह और उसके बाप मीर जाफ़र इस समय पूरी तरह फिरंगी की मुट्ठी में हैं।

नवाबी पाने की ख़ुशी में वह अंधे हो रहे हैं। दिल्ली का दबदबा तो पहले ही ख़त्म हो चुका था, एक बंगाल सिर उठाए खड़ा था, वह भी आज अँगरेज़ों के हाथ में चला गया।

मेहरअली—और क्या हुज़ूर? मीर जाफ़र साहब की नवाबी तो महज़ दिखावे की है, असली राजा होगा फिरंगी। उसी के इशारे पर होगा दिन और होगी रात। लेकिन मीर जाफ़र साहब फिरंगी की नज़रों में इतने ऊँचे कैसे चढ़ गए?

मोहनलाल—मीर जाफ़र की क्या हस्ती है मेहर-अली? एक दिन वह भी फिरंगी के लोभ की आग में जलकर भस्म हों जायगा। यह नवाबी ऐसे ही नहीं मिली है, इसका दाम एक करोड़ रुपए है।

मेहरअली—एक करोड़ रुपए?

मोहनलाल—हाँ, एक करोड़ रुपए। दस-पंद्रह दिनों पहले वाट्स रात की चोरी से ज़नानी पालकी में बैठ-कर मीर जाफ़र के महल में गया और नवाबी पाने के लालच में धोखबाज़ मीर जाफ़र ने अपने और बंगाल को बेच दिया। एक करोड़ रुपए कंपनी को देना पड़ा, पचास लाख कलकत्ते के फिरंगी वाशिंदों को। बीस

लाख हिंदू बाशिंदों को और सात लाख आर्मीनियनों को। नवाबी पाने के तीस दिनों के अंदर भुगतान होगा।

मेहरअली—(साश्चर्य) बंगाल क्या एकदम कंगाल हो जायगा हुज़ूर? यह सब ख़ज़ाना क्या मीर जाफ़र का अपना है, जो जब जी चाहा, जिसे दे दिया? यह तो प्रजा की अमानत है।

मोहनलाल—यह सोचते थे सिराजुद्दौला, जिन्हें प्रजा अब भी अपना मालिक समझती है। प्रजा के दिल में उनके लिये जो जगह है, वह हज़ार मीर जाफ़र मिलकर भी नहीं भर सकते।

[इसी समय नेपथ्य से आह और कराह के स्वर दूर से सुन पड़ते हैं, मेहरअली फिर दौड़कर बुर्ज़ी के ऊपर चढ़ जाता है और पीछे देखने लगता है।]

मोहनलाल—(नीचे से ही) उतर आओ मेहरअली। तुमसे वह देखा न जायगा।

मेहरअली—(नीचे आकर) कितना दर्दनाक है हुज़ूर! नवाब सिराजुद्दौला का नाम लेनेवालों को संगीनों से छेदा जा रहा है। और यह सब हो रहा है मीर जाफ़र के इशारे से और मीरन के हाथों, जो उनके

बुज़ुर्ग होने का दम भरते हैं। इतना ज़ुल्म धरती बर्दाश्त कैसे करेगी !

मोहनलाल—करेगी मेहरअली। धरती बर्दाश्त कर सकती है, तभी तो उसके सीने पर ज़ालिम का नंगा नाच होता है। हमारे पाप का घड़ा अभी भरा नहीं है।

(मीर जाफ़र, राजवल्लभ और रायदुर्लभ का प्रवेश । मीर जाफ़र अत्यंत सज्जित है।)

मीर जाफ़र—(सिर पर की सज्जा उतारकर रखते हुए) ओः, सिर में दर्द होने लगा। मेहर, अच्छा हुआ, तुम मौजूद हो। थोड़ी-सी ले आओ। जल्दी। (मदिरा लाने का संकेत करता है।)

(मेहरअली मुँह बिचकाकर जाता है।)

मोहनलाल—अभी से नवाबी बोझ मालूम होने लगी ? अभी तो तीन ही दिन हुए।

मीर जाफ़र—तो आप भी मौजूद हैं ? मैं नवाबी चाहता कहाँ था भाई ? फिरंगी ने ज़बरदस्ती की, बंगाल की बहबूदी की बात समझाई, तो लाचार होकर मुझे इस जंजाल में फँसना पड़ा।

राजवल्लभ—फिरंगी को हुज़ूर मीर जाफ़र साहब से क़ाबिल और कोई मिलता कहाँ ?

रायदुर्लभ---इस बुढ़ापे में भी शासन की बागडोर आपने बंगाल की भलाई के लिये ही तो सँभाली ?

मोहनलाल---बंगाल की भलाई के लिये प्लासी के मैदान से मुर्शिदाबाद तक सिराजुद्दौला का पीछा भी आपने किया। शर्म करो मीर जाफ़र, दुनिया को धोखा दो, पर अपने मन को धोखा मत दो। तुम अँगरेज़ों के साथ गुप्त संधि कर चुके थे, और प्लासी के मैदान में ही तुम्हारी नीयत बदलने लगी।

(रायदुर्लभ आगे बढ़कर मोहनलाल का गला दबाना चाहता है।)

मीर जाफ़र---(रोककर) क्या कर रहे हो राय दुर्लभ। अलग हटो। मोहनलाल सिराजुद्दौला के दाएँ हाथ हैं। तो तुम्हें बहुत कुछ मालूम है मोहनलाल ?

[मेहरअली शराब की सुराही और प्याली लाता है। मीर जाफ़र एक घूँट पीकर कुर्ते से ही मुँह पोंछ लेता है।]

देखता हूँ, तुम्हारा मुँह भी बंद करना पड़ेगा। मैं नहीं चाहता कि मेरी हुकूमत में ख़ून बहे, पर तुम लोग मुझे मजबूर कर रहे हो।

मोहनलाल---तुम्हारी हुकूमत ? तुम्हारी नवाबी धोखा और ख़ून से शुरू हुई है मीर जाफ़र ! नवाब सिराजुद्दौला के नाम लेनेवालों के सीने आज संगीनों से छलनी

किए जा रहे हैं। यह क्या विना तुम्हारी जानकारी के हो रहा है? सिराजुद्दौला ने तुम्हारी नीयत बदलते देखकर प्लासी के मैदान में अपनी पगड़ी तुम्हारे क़दमों पर रख दी और तुमने वफ़ादारी की क़सम खाई। यही तुम्हारी वफ़ादारी थी? अगर तुम वफ़ादार रहते, तो यह ताज आज तुम्हारे सिर पर न होता।

मीर जाफ़र—(एकदम उत्तेजित होकर) ले जाओ इसे। इसकी ज़ुबान खींच लो। मीर जाफ़र को चुनौती देने-वाली इसकी जुर्रत को ख़त्म कर दो। राजवल्लभ, हटाओ इसे मेरे सामने से। इसके ज़हर के दाँत तोड़ दो। हटाओ।

[राजवल्लभ और रायदुर्लभ आगे बढ़कर मोहनलाल की मुश्कें कस लेते और खींचकर ले जाते हैं। मेहरअली का मुख तमतमा आता है, पर वह विवश है।]

मोहनलाल—(जाते-जाते) बँधकर नहीं जाना चाहता मीर जाफ़र! (हाथ झटकार देता है।) यों ही चला जाऊँगा। पर जाते-जाते तुम्हें सावधान कर देता हूँ, फिरंगी का विश्वास मत करना। वह सिराजुद्दौला के नहीं हुए, तुम्हारे भी न होंगे। यह मत भूलो कि तुम सिराजुद्दौला को नहीं ख़त्म कर रहे हो, उसके साथ-साथ भारत की

आज़ादी को भी सदियों के लिये दूर ठेल रहे हो। पर नहीं, आज़ादी का पवित्र शब्द तुम्हारे सामने क्या मूल्य रखता है ?

[मोहनलाल चला जाता है, साथ में रायदुर्लभ और राजवल्लभ भी। मंच पर केवल मीर जाफ़र और मेहरअली रह गए हैं।]

मीर जाफ़र—(मेहरअली के हाथ से मदिरा लेकर पीते हुए) यह सब मिलकर मुझे पागल बना देंगे मेहर। मैंने यह सोचा भी न था कि सिराजुद्दौला के लिये बंगाल के दिल में इतना प्यार है। अब तो कुछ हो नहीं सकता।

मेहरअली—(उत्साहित होकर) सब कुछ हो सकता है हुज़ूर। सही रास्ता आदमी के लिये हमेशा खुला है। आप सीना तानकर फिरंगी के आगे खड़े हो जायँ। उससे साफ़-साफ़ कह दें कि अपने वतन की धरती पर परदेसी के पाँव आप जीते-जी जमने न देंगे।

मीर जाफ़र—और उसका नतीजा क्या होगा ? बुढ़ापे में फिरंगी के हाथों जान गवाऊँ ? भाग यहाँ से।

मेहरअली—नतीजा ? यह सोचना हमारा आपका काम नहीं है। आज़ादी के जंग में नतीजा पीछे रह जाता है हुज़ूर, मौत का खेल पहली शर्त है। मरना तो एक ही दिन होगा। (प्रस्थान)

[नेपथ्य से स्वर आते हैं—'अब्बा, अब्बा, मैंने बाग़ियों का मुँह बंद कर दिया।' यही कहते-कहते मीरन बीचवाली दीवार के पीछे से झपटता हुआ आता है, हाथ में ख़ून से लथपथ कटार है। चेहरा भयानक हो रहा है। पीछे-पीछे मुहम्मद बेग है। दीवार के ऊपर से झाँककर मीरन फिर दुहराता है—'अब्बा, मैंने बाग़ियों का मुँह बंद कर दिया।']

मीर जाफ़र—अच्छा किया बेटे! बंद करने से अच्छा था कि उन मुँहों को कुचल देते।

मीरन—(घूमकर मंच पर आता है, मुहम्मद बेग भी) अच्छी तरह कुचल दिया है अब्बा। ख़ुदा ने चाहा, तो सौ बरस तक वह सिर उठाने का नाम न लेंगे। सिराजुद्दौला ने यहाँ आते-आते अपनी आँखों से यह सब देखा है। देखते नहीं हो यह कटार?

मीर जाफ़र—तुम तैयार हो मुहम्मद बेग?

मीरन—(मुहम्मद बेग को कटार देते हुए) सँभालकर रख लो मुहम्मद बेग। (मुहम्मद बेग कटार के ख़ून को दामन से पोंछकर अपने कपड़ों में छिपा लेता है।) ख़ुदा तुमको कामयाब करे। सिराज यहाँ आ रहा है। मौक़ा देखकर यह कटार उसके सीने के पार कर देना। अगर काम पूरा नहीं हुआ, तो याद रखना, मीरन से बुरा कोई न होगा।

मीर जाफ़र—इम्तहान के वक़्त तुम्हारे हाथ न काँप जायँ। मुहम्मद बेग। सामने से न आना। सिराज की आँखों का जादू तुम्हें बेबस कर देगा।

[विक्षिप्त-सी अमीना का प्रवेश। बाल बिखर गए हैं, वस्त्र अस्त-व्यस्त। लुत्फ़ुन्निसा सँभालने की चेष्टा कर रही है, पर अमीना छूट-छूट जाती है। मुहम्मदबेग जल्दी से दूसरी ओर निकल जाता है।]

अमीना—कहाँ है मेरा लाल? कहाँ है मेरा बेटा? अरे मीरन, मूरत की तरह तू खड़ा क्यों है? मुझे ले चल मेरे सिराज के पास। कब से उसे देखने को तरस रही हूँ।

मीरन—मा, अब जाकर सो रहो। सिराज के पास तुम नहीं जा सकोगी।

अमीना—कहता क्या है मीरन? मा अपने बेटे के पास नहीं जा सकेगी? कौन-सी वह जगह है इस दुनिया के पर्दे पर, जहाँ मा की मामता नहीं जा सकती? मुझे पता बता तो सही। मा की आँखों के आँसू उसे मा की गोद में लाकर डाल देंगे।

लुत्फ़ुन्निसा—क्यों अपने को छोटा बनाती हो मा? किससे फ़रियाद कर रही हो। आँसू और मामता का असर आदमी पर पड़ता है। जिनकी इंसानियत शैता-

नियत के हाथों बिक चुकी है, उनके कलेजे पत्थर के होते हैं। तुम्हारा सिराज इन ज़ालिमों के चंगुल से अब वापस नहीं मिलेगा मा।

अमीना—तो अब मैं मान लूँ बेटी कि मेरा लाल मुझसे हमेशा के लिये छिन गया? लेकिन भरोसा नहीं होता। मा का दिल बड़ा कमज़ोर होता है बेटी।

लुत्फ़ुन्निसा—लेकिन वक़्त आने पर उसे फ़ौलाद का बनना पड़ता है मा। टूट जाए, पर झुके नहीं।

अमीना—यह तू कह रही है बेटी? औरत का दिल क्या इतनी चोट बर्दाश्त कर सकता है? अपने हाथ से अपने प्यार की धरोहर दूर ठेल सकता है? इतना सब्र औरत के भाग्य में कहाँ है?

मीर जाफ़र—क्या इस घर से लाज-हया भी उठ गई अमीना? बुज़ुर्गों के सामने नवाबी ख़ानदान की औरतें मुँह नहीं खोलती थीं।

लुत्फ़ुन्निसा—(सिर पर का आँचल और भी हटा देती है।) हाँ, पर तब बुज़ुर्ग भी इज़्ज़त पाने के हक़दार होते थे। सब्र की बात कहती हो मा? औरत के दिल का सब्र देखना चाहती हो? राजमहल से तुम्हारे बेटे को यह लोग क़ैद करके ला रहे थे और मैं अटारी पर से देख

रही थी। जोगी के भेस में हाथों में हथकड़ी डाले हुए जब वह अटारी के नीचे से गुज़रे, तब उनकी आँखें पर उठ गईं। मैंने देखा मा, देखकर एक आह कलेजे से निकली और सूने में खो गई। औरत के भाग्य में यही है। कितनी जलती आहें और कितना गर्म पानी लेकर औरत ज़िंदा रहती है।

अमीना—या ख़ुदा ! परवरदिगार ! यह मुझे किस पाप की सज़ा मिल रही है ? मेरे सिराज ने किसी का क्या बिगाड़ा है ? तूने देखा ? अपनी आँखों देखा कि उसके हाथों में हथकड़ी पड़ी हैं ? उसकी आँखें ऊपर उठी थीं और उसने तुझे देखा ? अरे, मेरे लाल की कलाइयों में काले निशान उभर आए होंगे। उसे बहुत तकलीफ़ होगी, पर वह किसी से कहेगा नहीं। हमेशा चुप रहनेवाला है, अपना दुःख-दर्द कभी किसी से कहता नहीं। (मीर जाफ़र के पास जाकर) उसे किसी ने प्यार से खिलाया भी न होगा। मुझे जाने दो उसके पास, नहीं तो·····(उत्तेजित होकर) नहीं तो मैं सबको खा जाऊँगी, हाँ।

[मीर जाफ़र और मीरन भयभीत होकर कुछ पग पीछे हटते हैं। तभी दीवार के पीछे सिराजुद्दौला आते देख पड़ते हैं। पीछे

दो सिपाही हैं, जो उनके मंच पर आ जाने पर मीर जाफ़र को सलाम कर चले जाते हैं। सितार पर करुण रागिनी। सिराजुद्दौला का वेश साधुओं-जैसा है, पर मुख प्रदीप्त है। इस समय हाथों में हथकड़ी नहीं है।]

अमीना—(देखकर एकदम झपटकर सिराज को चिपटा लेती है।) बेटा, मेरे लाल, मेरे चाँद, मेरे चाँद! आह, तीन दिनों से तुझे देखने को यह आँखें तरस गईं! (बलाएँ लेती हैं।) अपनी मा को भूल गया सिराज!

[हर्षातिरेक से सर्वत्र हाथ फेरने लगती और सहसा शिथिल होकर गिर पड़ती हैं। लुत्फ़ुन्निसा झट से पास बैठकर आँचल से हवा करने लगती है।]

सिराजुद्दौला—(पास बैठकर) मा! मा! (शरीर झकझोरकर) मा, क्यों तुम यह सब देखने के लिये ज़िंदा हो? अच्छा हो, तुम्हारी ये बंद आँखें अब कभी न खुलें। हाँ मा, यह तुम्हारा बेटा कह रहा है। तुम्हारा सिराज कह रहा है, जो अपना काला मुँह तुम्हें नहीं दिखाना चाहता। तुम समझ लो मा कि सिराज मर गया।

लुत्फ़ुन्निसा—(सिराजुद्दौला का मुँह बंद कर देती है।) नहीं, नहीं मेरे आक़ा, सिराज कभी नहीं मर सकता।

वह हमेशा ज़िंदा रहेगा, और आज़ादी के दीवाने उसे अपनी पूजा चढ़ाएँगे । प्लासी के मैदान में सिराजुद्दौला की हार ने आगे के लिये जीत का रास्ता खोल दिया है । तुमने ग़ुलामी से समझौता नहीं किया, फिरंगी के आगे घुटने नहीं टेके, परदेसी बनियों के आगे भीख की झोली नहीं फैलाई, फिर तुम्हें कैसा पछतावा ?

सिराजुद्दौला—यही सोचकर तो अब तक ज़िंदा हूँ लुत्फ़, नहीं तो आज़ादी के दुश्मनों को मौत के साए में सुलानेवाले इन हाथों से ख़ुद अपने सीने में कटार भोंक लेता । ख़ुदकुशी पाप है ! बेगम.....नहीं, अब सिराज नवाब नहीं है । बेगम कहकर तुम्हारी हँसी नहीं करूँगा । ख़ुदकुशी पाप है, पर भगोड़ा और डरपोक बनकर ज़िंदा रहना इससे भी बड़ा पाप है । (अमीना हिलती-डुलती है ।) उठो मा, तुम्हें तो ख़ुश होना चाहिए कि तुम्हारा सिराज बहादुरों की तरह जंग में लड़ता रहा ।

मीर जाफ़र—रस्सी जल जाने पर भी ऐंठन अभी बाक़ी है सिराज ? प्लासी की हार से भी तुमने नसीहत नहीं ली ?

सिराजुद्दौला—(खड़े होते हुए) बहुत बड़ी नसीहत ली

है नाना, और मीर मदन को चारो ओर से घेरकर तुम लोग मार न डालते, तो उस नसीहत का जौहर देख लेते। सिराज का दिमाग़ और मीर मदन की तलवार मिलकर प्लासी के मैदान में वह आग उगलते, जिसमें से बचकर भाग निकलना तुम्हारे और तुम्हारे मालिक फिरंगी, दोनो के लिये मुश्किल होता।

मीरन—(व्यंग्य से) लेकिन भागना पड़ा तुम्हें।

[अमीना आँखें मलती हुई उठ बैठती है। लुत्फ़ुन्निसा सिराज के पास आकर खड़ी हो जाती है।]

अमीना—यह झूठ है मीरन! मेरा सिराज जंग में पीठ नहीं दिखा सकता। सिराज बेटा, तू क्या सचमुच डरकर भाग आया था?

सिराजुद्दौला—सिराज ख़ुद कमज़ोर सही, पर उसकी नसों में नवाब अलीवर्दी का ख़ून बह रहा है मा! तुम्हारे दूध और प्यार ने उसे पाला है। हिंदोस्तान की नदियों और पहाड़ों ने, खेतों और जंगलों ने, धरती और आसमान ने उसे आज़ादी का पाठ पढ़ाया है। उसे इतना गिरा हुआ समझती हो मा?

अमीना—मैं नहीं समझती बेटा, पर आज तीन दिनों से मुझे यही बात समझाई जा रही

है। सुनते-सुनते मुझे ख़ुद अपनी कोख पर लाज आने लगी है।

लुत्फ़ुन्निसा—(पास जाकर सिराजुद्दौला के वस्त्र छूकर) यह भेस बनाकर तुम्हारा रातों-रात महल से निकल जाना और भी शुबहा पैदा करता है। जंग में हार-जीत तो होती ही है, पर.....

सिराजुद्दौला—पर मैं जंग से डर कर भाग आया, यही कहना चाहती हो न ? मैं कायर हूँ, डरपोक हूँ, आज़ादी पर मरना नहीं जानता। अच्छी बात है। अगर सिराज के माथे पर यही काला टीका लगना है, तो यही सही। या ख़ुदा, यही सब सुनने के लिये सिराज ज़िंदा है ? सुन रहे हो नवाब अलीवर्दी, तुम्हारे सिराज पर आज घरवाले ही कैसी तुहमत लगा रहे हैं ?

अमीना—तुहमत नहीं बेटा, मैं तो सुनी हुई बात कह रही हूँ।

लुत्फ़ुन्निसा—हम यहाँ महलों में बंद थे। तुम वहाँ जंग के मैदान में थे। हमारी आँखें वही देख सकती हैं, जो हमें दिखाया जाय। कान वही सुन सकते हैं, जो सुनाया जाय।

सिराजुद्दौला—ठीक कहती हो लुत्फ़ ! तुम्हारी

आँखों ने सिराज की हथकड़ियों में कसी कलाइयाँ देखीं। तुम्हारे कानों ने उसकी हार की ख़बरें सुनीं। पर तुम्हारी आँखों ने यह नहीं देखा कि हथकड़ी पहनने के पहले सिराज की इन कलाइयों ने प्लासी के मैदान में आज़ादी के दुश्मनों का फ़ौलाद बनकर सामना किया। तुम्हारे कानों में सिराज की वह पुकार नहीं पहुँची, जिसे सुनकर हज़ार-हज़ार बहादुर फ़िरंगी पर बिजली बनकर टूट पड़े और प्यारी आज़ादी के लिये जान दे दी।

[इसी समय प्रवेश-द्वार पर वाट्स का मुख देख पड़ता है। मीरन आगे बढ़कर स्वागत करता है और सिराजुद्दौला नफ़रत से मुँह फेर लेते हैं। सिराजुद्दौला बेंत की चौकी पर बैठ जाते हैं। लुत्फ़ुन्निसा सिर पर आँचल खींच लेती और अमीना केवल देखती रह जाती है। मीर जाफ़र कुछ समझ नहीं पाता कि क्या करे।]

मीर जाफ़र—वाट्स साहब ? आप ? इस वक़्त ? यहाँ ? ख़ैर तो है ?

[मीरन बाईं ओर वाली चौकी की झाड़-पोंछ करता है। उसे इस बात पर क्रोध है कि सिराज वाट्स के सामने उठता क्यों नहीं।]

मीरन—यहाँ हुज़ूर, यहाँ बैठिए। मैं बिछाने के लिये कुछ लाता हूँ। (जल्दी से प्रस्थान)।

वाट्स—हम बैठने नहीं आया मीर जाफ़र। (बैठ जाता है।) बैठने शे हमारा काम नहीं चलने शकेगा। क्लाइव शाहब का चिट्ठी आया है। हमको रुपिया का बहुत ज़रूरत है। तुम एक करोड़ शेवेन्टी शेवन लैक्श देने को बोला है। क्लाइव शाहब जानना माँगता है कि तुम कब देना माँगता है ?

मीर जाफ़र—बंगाल का खज़ाना पहले ही सिराज लुटा चुका है वाट्स साहब। दिल्ली-दरबार से अब एक पाई की मदद नहीं मिल सकती। लेकिन मीर जाफ़र अपने क़ौल से मुकरना नहीं जानता। रुपया आपको मिलेगा, लेकिन वक़्त चाहिए।

वाट्स—वक़्त ? वक़्त हम तुमको एक महीने का दिया है, उशशे ज़्यादा एक दिन रुकने नहीं शकता। शिराज बहादुर है, अपने कन्ट्री पर जान देता है। हम उशे नवाबी शे हटा शकता है, फिर तुमको हटाते हम देर नहीं लगाने शकता। तुम गड़बड़ करेगा, तो हम....

सिराजुद्दौला—बंद करो यह बकवास वाट्स। मुर्शिदाबाद के महल में फिरंगी की यह हिम्मत सिराज

बर्दाश्त नहीं कर सकता। आज वह लाचार है, तुम लोगों की क़ैद में है। वह अपनी तौहीन सह सकता है पर बंगाल की आज़ाद नवाबी की बेइज़्ज़ती उसकी खुली हुई आँखें नहीं देख सकतीं। हट जाओ वाट्स, नहीं तो····नहीं तो····सिराज के सिर पर ख़ून सवार है वाट्स।

(वाट्स का गला दबाने के लिये आगे बढ़ते हैं। वाट्स डर कर पिस्तौल निकाल लेता है। लुत्फ़ुन्निसा बीच में आ जाती है।)

वाट्स—शिराज, शिराज। हम तुमको कुछ नहीं बोला शिराज। हम तुम्हारी इज़्ज़त करता है। वतन पर जान देनेवालों की इज़्ज़त करना हम जानता है शिराज।

सिराजुद्दौला—(लुत्फ़ुन्निसा को हटाते हुए) तुम हट जाओ लुत्फ़। ज़िंदगी रोज़-रोज़ नहीं मिलती।

लुत्फ़ुन्निसा—नहीं, नहीं। लुत्फ़ुन्निसा की ज़िंदगी इन क़दमों से बँधी हुई है मेरे आक़ा। जिन हाथों की गोली के सामने तुमने अपना सीना खोल दिया है, एक दिन उन्हीं हाथों की हथकड़ियाँ तुमसे दया की भीख माँग रही थीं। उनकी बीवियों का सुहाग तुमने लौटा दिया था। आज उनके हाथों मेरा सुहाग लुटता है तो

मुझे नाज़ है। तुम्हारे साथ-साथ तुम्हारी लुत्फ़ भी आज़ादी की साँस लेती हुई मर जाय, इससे बढ़कर उसके लिए क्या होगा।

अमीना—वाट्स साहब, इतना ज़ुल्म धरती से सहा न जायगा। बेगुनाहों का ख़ून एक दिन तुम्हें ले डूबेगा। हम तुमसे दया की भीख नहीं माँगते, महज़ सही फ़ैसला करने को कह रहे हैं।

मीर ज़ाफ़र—हाँ वाट्स साहब, हम भी यही कहते हैं। आप ख़ुद ही सोचिए, हम इतनी जल्दी इतनी बड़ी रक़म कहाँ से देंगे ?

वाट्स—तुम ग़द्दार हो मीर जाफ़र। तुमने बंगाल को, हिंदोश्तान को, शिराज को, शबको धोखा दिया है। अब हमको धोखा देना माँगता है। पर हम तुम्हें नहीं छोड़ेगा मीर जाफ़र। नवाब बनने के लिये तुम हमारी ख़ुशामद किया, हमको रुपिया देने का वादा किया, हम मान लिया। तुम कहाँ शे देगा, यह हम नहीं जानता। हमको एक महीने में रूपिया चाहिए, वह हम गोली के ज़ोर शे लेगा, नहीं तो हम तुमको कीड़े की तरह मशल देगा। शमझा। (जाता है।)

[मीरन वाट्स के पीछे-पीछे बाहर निकल जाता है। मंच पर

सब थोड़ी देर के लिये स्तब्ध रह गए हैं, केवल सिराजुद्दौला की मुखाकृति और चेष्टाओं से स्तब्धता के बदले घृणा और लाचारी टपक रही है। मीर जाफ़र हताश भाव से टहलने लगता है।]

अमीना—सुना तुमने, फिरंगी भी मेरे लाल की इज़्ज़त करता है। (मीर जाफ़र के पास जाकर) पर तुमने उसकी क़ीमत नहीं आँकी। सात समुंदर पार के फिरंगी जिसकी हिम्मत और दिलेरी पर नाज़ करते हैं, तुमने उसके हाथों में हथकड़ी डाल रक्खी है।

मीर जाफ़र—जले पर नमक न छिड़को अमीना। यह नवाबी मेरे जी का जंजाल बन गई।

लुत्फ़ुन्निसा—(सिराज के पास जाकर गर्व से) इस धूल के हीरे की क़ीमत यह लगाएँगे मा? इसे परखने के लिये जौहरी की आँखें चाहिए।

सिराजुद्दौला—मुझे धूल में ही पड़ा रहने दो बेगम। जो आज दुनिया के सामने आने क़ाबिल नहीं रहा, उसे सोने के बंगाल की मेरी धरती पनाह देगी। बड़े बेमौक़े तुमने धोखा दिया नाना।

मीर जाफ़र—अपनी हार को दूसरों के सिर मढ़ना चाहते हो सिराज?

सिराजुद्दौला—नहीं, पर प्लासी के मैदान की

चप्पा-चप्पा ज़मीन सिराज के साथ किए गए धोखे की गवाह है। मा, सुनना चाहती हो वह कहानी ? (अमीना को चौकी पर बिठा देते हैं।) सिराज के हाथ उस मैदान में क़यामत बरसा रहे थे। उसकी तलवार बिजली बनकर दुश्मनों पर छा गई थी और तुम्हारा सिराज अपने दिल की दया और रहम का गला घोंटकर उस वक़्त शैतान बन गया था। क़रीब था कि जीत का सेहरा हमारे सिर बँधता, फिरंगी के पाँव उखड़ चुके थे, पर मा, नाना ने जीती हुई बाज़ी पलट दी। उस धोखे ने सिराज की कमर तोड़ दी और उसे मैदान छोड़कर मुर्शिदाबाद लौटना पड़ा।

[सहसा नेपथ्य से 'कहाँ हैं ? कहाँ हैं हमारे नवाब सिराजुद्दौला ?' कहते हुए दीवार के पीछे से मोहनलाल भागता हुआ आता है, पीछे-पीछे मीरन। सिराजुद्दौला उठकर खड़े हो जाते हैं। मोहनलाल एकदम चरणों पर गिर पड़ता है।]

सिराजुद्दौला—(मोहनलाल को उठाते हुए) क्या हुआ मोहनलाल ? तुम पागल तो नहीं हो गए ?

मोहनलाल—(वैसे ही लोटते हुए) ज़िंदगी का यह पहला और आख़िरी पागलपन तुम्हें बर्दाश्त करना पड़ेगा नवाब सिराजुद्दौला। मरने के पहले एक बार इन

चरणों की धूल माथे पर लगाना चाहता था। (धूल माथे में लगाते हुए) बस, अब मरने में कोई कष्ट न होगा। ले चलो मीरन। (उठ जाता है।)

अमीना—मैं समझी नहीं मोहनलाल ! यह मरने की बात ?

मोहनलाल—नहीं समझोगी मा ! तुमने अपनी कोख से सिराज को नहीं, एक देवदूत को जनम दिया है। तुमने देखा होता वह दृश्य। आज़ादी के इस दीवाने का अद्भुत रण-कौशल ! अगर मीर जाफ़र और यारलुत्फ़खाँ ऐन मौक़े पर, जब हमारी जीत में कुछ ही घड़ियों की देर थी और फिरंगी भाग रहे थे, हमारी पैंतालिस हज़ार सेना लेकर एकदम अँगरेज़ों की ओर न चले गए होते...तो....

लुत्फ़ुन्निसा—(काँपकर) ओः इतना बड़ा धोखा ? इतना बड़ा फ़रेब ? इतना बड़ा जाल ?

अमीना—मुझे तो ख़्वाब में भी तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी। (मीर जाफ़र से) यह तुमने क्या किया ? अब्बा ने सिराज को तुम्हारे हाथ सौंपा था न ? या ख़ुदा !

मोहनलाल—मीर मदन, मेरा वह बहादुर दोस्त,

प्लासी के मैदान में अकेले सिराज के साथ कंधा मिलाए डटा रहा। यह दोनो दीवाने मौत के साए में आज़ादी की मशालें लिए दुश्मनों को आगे बढ़ने से रोकत रहे। लेकिन कब तक ? फिरंगी की गोली ने मीर मदन की छाती छेद दी और बंगाल का वह सपूत बंगाल की प्यारी मिट्टी में लोट गया।

सिराजुद्दौला—(अमीना की गोद में बच्चों की तरह मचल-कर) और मैं यह काला मुँह लेकर ज़िंदा रह गया मा ! फिरंगी की गोली ने भी इस पापी की ओर से नफ़रत से मुँह फेर लिया।

मीरन—तुम्हें जान-बूझकर छोड़ दिया गया सिराज ! तुम फिरंगी की गोली के शिकार नहीं थे, तुम हमारे शिकार थे। फिरंगी की गोली से अब्बा की बेइज़्ज़ती का बदला न चुकता।

सिराजुद्दौला—सुन रही हो न मा ? अब तो तुम्हें भरोसा हुआ कि तुम्हारा सिराज मैदान से पीठ दिखा-कर नहीं भागा ? मुझे तभी शुबहा हुआ था कि नाना की नियत बदल रही है। मैंने अपनी पगड़ी उतारकर इनके क़दमों पर रख दी। इन्हें याद दिलाया कि नाना, सिराज की ज़िंदगी और मौत का सवाल है। एक

सिपाही की दग़ा भी इस वक़्त फिरंगी के लिये न्यामत साबित होगी और उसकी मुराद पूरी होने का मौक़ा देगी। लेकिन मेरे आँसू भी नाना का पत्थर-दिल न पिघला सके मा !

लुत्फ़ुन्निसा—(सिराजुद्दौला से) क्यों तुम झुकने गए ? क्यों तुमने अपनी बेइज़्ज़ती कराई ? क्यों तुमने पत्थर पर सिर मारने की कोशिश की मेरे आक़ा ? क्यों नवाबी की शान में बट्टा लगाया ?

सिराजुद्दौला—हिंदोस्तान की आज़ादी लाख-लाख सिराजुद्दौला की इज़्ज़त से बड़ी चीज़ है लुत्फ़ ! यह नवाबी, यह शान-शौक़त, यह तख़्त और ताज आज़ादी की सूखी रोटी के सामने कोई वक़त नहीं रखते। तुम्हारे सिराज ने सिर झुकाया था बंगाल को आज़ाद देखने के लिये, बेइज़्ज़ती क़ुबूल की थी वतन की इज़्ज़त रखने के लिये, पत्थर से टकराने की कोशिश की थी मादरे वतन की आँखों के आँसू पोंछने के लिये। (करुण कंठ) पर नहीं हुआ लुत्फ़ ! सिराज अपनी कोशिशों में नाकामयाब रहा और बंगाल फिरंगी का ग़ुलाम हो गया।

अमीना—(सिराजुद्दौला के सिर पर हाथ फेरकर) तूने

मेरी कोख की लाज रख ली बेटा, जन्नत में बैठे हुए अब्बा ऊपर से तुझ पर आसीस बरसा रहे होंगे। (मीर जाफ़र से) और तुम्हें क्या कहूँ ? खुदा तुम्हें इस फ़रेब की सज़ा देगा !

मीरन—चुप रहो बड़ी मा ! मैं अब तक लिहाज़ कर रहा था, पर उसकी भी एक हद है। अब्बा, अमीचंद की ख़बर सुनी ?

मीर जाफ़र—नहीं तो। क्या हुआ ?

मीरन—क्लाइव साहब ने उसे तीरथ करने की सलाह दी है। वह तो एकदम पागल हो गया है।

(एक ओर से पागलों की तरह चीख़ते-चिल्लाते अमीचंद का प्रवेश।)

अमीचंद—हाय, मैं लुट गया। मैं मर गया मीर जाफ़र। तुम लोगों की बातों में आकर मैं तो कहीं का न रहा। मैं एकदम कंगाल हो गया। हाय राम, अब क्या होगा ?

मीर जाफ़र—क्यों जानवरों की तरह चीख़ रहे हो अमीचंद ?

अमीचंद—मैं जानवर हूँ ? आज मैं जानवर हूँ ? कल तक तुम और तुम्हारे दोस्त फिरंगी इसी अमीचंद

की ख़ुशामदें करते थे। आज इसकी पाई-पाई तुम्हारे पेट में समा गयी, और वह जानवर हो गया। क्यों मीर जाफ़र ?

सिराजुद्दौला—तुमने अपने से अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारी है अमीचंद !

अमीचंद—जानता हूँ नवाब सिराजुद्दौला। मानता हूँ, और उसी का नतीजा भुगत रहा हूँ।

मीरन—(चीख़कर) अमीचंद ! सिराजुद्दौला अब नवाब नहीं है। नवाब हैं अब्बा, मीर जाफ़र साहब !

अमीचंद—(अट्टहास कर) नाम के, केवल नाम के नवाब हैं मीर जाफ़र। असल में राज होगा फिरंगी का और तुम और तुम्हारे अब्बा ऐसे-ऐसे (नाचते हुए) ताक् धिना धिन्, ताक् धिना धिन् फिरंगी के इशारे पर नाचेंगे।

मीर जाफ़र—ले जाओ इसे। मीरन, मैं कहता हूँ, हटाओ इसे यहाँ से। नहीं तो ख़ून कर डालूँगा। हाँ।

मोहनलाल—किसका-किसका ख़न करोगे मीर जाफ़र ? किसका-किसका मुँह बंद करोगे ?

मीर जाफर—सबका ख़ून कर डालूँगा। सबका गला घोंट दूँगा। तुम लोगों ने समझ क्या रक्खा है

मीर जाफ़र को ? मीरन, मैं फिर कहता हूँ, हटाओ इन कंबख्तों को ।

मीरन—(मोहनलाल और अमीचंद को ढकेलते हुए) क्यों अपनी जान से खेल रहे हो तुम लोग ? निकलो यहाँ से, वरना अब्बा किसी को ज़िंदा न छोड़ेंगे । चलो ।

[ढकेलता है । मोहनलाल तो बाहर निकल जाता है, पर अमीचंद जाते-जाते फिर एक बार नफ़रत से मीर जाफ़र को देख-कर अट्टहास करता है ।]

अमीचंद—क्लाइव कहता है, तीर्थ-यात्रा करने को । मीर जाफ़र, नवाबी मसनद पाने के बाद तुमने मुझे तीस लाख रुपए देने का वादा किया था न ? और नवाबी ख़जाने का पाँच फ़ीसदी और ऊपर से । मेरे देश-द्रोह का मूल्य चुका रहे हो या नहीं ? पर नहीं, तुम तो ख़ुद ही ग़द्दार हो । तुम मेरी क्या मदद करोगे ? हाः हाः हाः फिरंगी कहता है, अमीचंद ! तीर्थयात्रा करो । गंगा नहाओ । तब तुम्हारे पाप धुलेंगे । हाः हाः हाः, पर तुम्हारे पाप कैसे धुलेंगे मीर जाफ़र ?

मीर जाफ़र—(लात मारकर) निकल जाओ यहाँ से ।

[अमीचंद पागलों-जैसा हँसता हुआ बाहर जाता है, नेपथ्य से उसका अट्टहास सुन पड़ता है । मीरन भी चला जाता है ।

मीर जाफ़र माथे का पसीना पोंछता हुआ टहलने लगता है, सहसा रुककर]

मीर जाफ़र—अमीना, मैं अब सोने जा रहा हूँ। बुढ़ापे का यह जिस्म ज्यादा खींचतान बर्दाश्त नहीं कर सकता। अच्छा हो, तुम भी जाओ और बहू को भी ले जाओ।

अमीना—और सिराज ?

मीर जाफ़र—मैं जाकर मीरन को भेज देता हूँ। वह इसे सामनेवाली कोठी में पहुँचा देगा।

लुत्फ़ुन्निसा—लेकिन इन्हें अब कोई मा के आंचल के साए से दूर नहीं कर सकता। मेरी नज़रों की ओट इन्हें खुदा भी नहीं ले जा सकता। तुम लोगों ने बहुत मनमानी कर ली, अब यह कहीं नहीं जायँगे।

मीर जाफ़र—जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी आँखें कोई और दर्दनाक नज़ारा देखें। शायद तुमसे यह सब बर्दाश्त न हो। वह सब बड़ा खौफनाक होता है अमीना !

अमीना—क्या सब ? तुम कह क्या रहे हो ? मुझे समझाकर कहो न !

सिराजुद्दौला—नाना ! (अमीना से लिपटकर) मेरी मा

की बात करते हो ? वह नवाब अलीवर्दी की बेटी है। सिराज की मा है नाना। इस मा ने ही मुझे भारत माता की ख़िदमत का मौक़ा दिया है। देखो, देखो इसके सुफ़ेद बर्फ़ से होनेवाले बाल। हिमालय की चोटियों-सरीखा उठा हुआ इसका मुँह देखो नाना। इसके क़दमों की पूजा ने ही सिराज को भारत मा के क़दमों की पूजा करना सिखाया है। (लुत्फ़ुन्निसा के पास जाकर उसका सिर थपथपाते हुए) और यह है मेरे प्यार और मुहब्बत की देवी। सिराज के ज़िंदगी की रौशनी। उसके राह की साथिन, फिर वह राह फूलों पर होकर जाती हो या काँटों पर। हिंदोस्तान की औरतों के लिये यह दोनो मिसाल हैं नाना, तुम इन्हें डर दिखाते हो ?

मीर जाफ़र—अच्छी बात है। मैं चला। मैंने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया। (एक ओर से जाता है, दूसरी ओर से उसी समय दीवान राजवल्लभ प्रवेश करता है। मीर जाफ़र का अंतिम वाक्य सुन लेता है।)

राजवल्लभ—फ़र्ज़ अदा कर दिया ! हुगली नदी में तुम्हारे डूब मरने के लिये क्या जल की कमी है मीर जाफ़र ? (सिराजुद्दौला से) मुझे क्षमा कर दीजिए, मुझे क्षमा कर दीजिए। आज मेरा पाप मुझे खाए

डाल रहा है नवाब सिराजुद्दौला ! मुझे दया की भीख दीजिए। आपकी कृपा की छींटों से ही मेरी तन-बदन की आग शांत होगी। मेरी और मेरे बेटे की यह प्रार्थना स्वीकार करें हुज़ूर !

सिराजुद्दौला—तुम्हारे बेटे को वापस करने के लिय मैंने फिरंगी से कई बार कहा राजवल्लभ, पर उसने नहीं माना।

राजवल्लभ—मानता कैसे हुज़ूर ? और फिर, मान लेता तो मेरा दंड कैसे पूरा होता ? आज मुझे उसका दुःख नहीं है। इससे बड़ी सज़ा मुझे मिले तो वह भी मेरे अपराध के सामने छोटी होगी। आपकी क्षमा मिल जाय तो मुझे कुछ शांति मिलेगी।

सिराजुद्दौला—मैं तो खुद ही आज तुम लोगों की मुआफ़ी चाहता हूँ राजवल्लभ ! उन सब लोगों की मुआफ़ी, जो आज हमारी कमज़ोरी से फिरंगी के ग़ुलाम बन गए हैं। मुझे आज सबकी आँखों का पानी चाहिए। दे सको, तो वही दो तुम लोग।

(मेहरअली का प्रवेश। सिराजुद्दौला को झुककर सलाम करता है।)

मेहरअली—बेटी उम्मत उठ गई है मा, मेरे मनाए नहीं मानती।

अमीना—चलो बेटी, बिटिया आज रोते-रोते सो गई है। तीन दिनों से अब्बा-अब्बा की रट लगाए है। आँखें सूज आई हैं।

लुत्फ़ुन्निसा—(सिराजुद्दौला से) तुम भी चलो न, एक बार उसके दिल को तसल्ली हो जायगी। एक बार उसे गोद में उठा लो मेरे आक़ा, उसे दुनिया की न्यामत मिल जायगी।

अमीना—हाँ बेटा, तेरे विना तीन दिनों में ही वह अनाथ हो गई। चल न!

लुत्फ़ुन्निसा—मेहर, तू चल। मैं इन्हें लेकर आती हूँ। (मेहरअली जाता है।)

सिराजुद्दौला—क्यों मुझे उसके सामने ले जाती हो लुत्फ़? उसके सामने मेरा धीरज छूट जायगा। उससे कह दो कि उसका बाप मर गया। और ऐसी मौत मर गया, जिस पर बड़ी होने पर वह शर्म से धरती में गड़ जायगी। उसे मुँह छिपाने को जगह न मिलेगी। तुम जाओ लुत्फ़, मैं नहीं जा सकूँगा।

[लुत्फ़ुन्निसा मुँह पर आंचल धरकर फफककर रो देती है। तभी नेपथ्य से फिर सुन पड़ता है, "बेगम साहबा, बिटिया चुप नहीं होती।" लुत्फ़ुन्निसा लाचारी से चली जाती है। सिराजुद्दौला

मोहाभिभूत एक बार जाने को आगे बढ़ते हैं, फिर रुक जाते हैं और मुँह ढाँपकर बीचवाली चौकी पर बैठ जाते हैं।]

अमीना—तेरे दिल की हालत मैं समझ रही हूँ बेटा। उम्मत ज़हूरा तेरे प्यार की मूरत है। पर एक बार उसके पास चला चल बेटा। वह निहाल हो जायगी। वह दिन भूल गया, जब यही उम्मत तुझे एक दिन के लिये भी नहीं छोड़ती थी? तेरे पीछे-पीछे साए की तरह फिरती थी? कितने दिनों से तूने उसे गोदियों में नहीं खिलाया। वह रूठ जायगी।

सिराजुद्दौला—आज सारा ज़माना सिराज से रूठ गया है मा! आज़ादी की देवी रूठ गई, तो भी सिराज ज़िंदा है और साँस ले रहा है। (सहसा उठकर) पर नहीं, सिराज ने कभी जान-बूझकर किसी का दिल नहीं दुखाया, उस मासूम बच्ची का दिल भी सिराज नहीं तोड़ सकता। चलो मा, एक बार उसे खिला लूँ। फिर शायद मौक़ा न मिले।

[अमीना को लेकर सिराजुद्दौला बाहर निकल जाता है। मंच पर कुछ क्षण शांति। प्रकाश किंचित् मंद पड़ता है। सावधानी के साथ इधर-उधर देखते हुए मीरन का दीवार के पीछे से प्रवेश। साथ में

हाथ में कटार लिए हुए मुहम्मद बेग। दोनो सामने मंच पर आ जाते और बीचवाली चौकी के पास जाते हैं।]

मीरन—यही जगह ठीक रहेगी मुहम्मद बेग। यह जगह सिराज को बहुत प्यारी है।

मुहम्मद बेग—(हाथ बढ़ाकर) मेरा इनाम हुजूर?

मीरन—(अपने वस्त्रों के नीचे से एक थैली निकालकर देते हुए) मीरन का भरोसा नहीं होता? अपने कौल से मीरन हटना नहीं जानता।

मुहम्मद बेग—मानता हूँ हुजूर। क़ौल पूरा करना कोई आपसे और आपके वालिद मीर जाफ़र साहब से सीखे। क़ौल कैसे पूरा किया जाता है, यह तो आप लोगों ने प्लासी के मैदान में ही दिखला दिया।

मीरन—(डाँटकर) यह सब सियासत की बातें हैं मुहम्मद बेग, नौकरों को इसमें दख़ल न देना चाहिए। तुम्हारा काम है हमारा हुक्म मानना। नहीं तो मौत को गले लगाने को तैयार रहो।

मुहम्मद बेग—वही कर रहा हूँ हुजूर! मौत को हँसते-हँसते गले लगा सकते हैं नवाब सिराजुद्दौला। मुहम्मद बेग का कहाँ ऐसा भाग कि वह मर सके! (थैली छिपाते हुए) इसमें कितना है हुजूर?

मीरन—जितना कहा था, उतना ही मिलेगा। आधा अभी, आधा काम पूरा होने पर। निशाना ख़ाली न जाय, वरना यही कटार तुम्हारे सीने के पार होगी। जल्दी करो, नहीं कोई आ जायगा। (मुहम्मद बेग चौकी के पीछे छिपकर बैठता है।) हाँ, ठीक है। ख़ुदा तुम्हें कामयाब करे बेग ! (जल्दी से सावधानी बर्तता हुआ चला जाता है।)

मुहम्मद बेग—(चौकी के पीछे से सिर निकालकर) ख़ुदा का पाक नाम न लो मीरन ! (सिर छिपा लेता है।)

[नेपथ्य में एक तेज़ कराह का स्वर। उसी समय मेहरअली भागता हुआ आता है। दूसरी ओर से रायदुर्लभ का प्रवेश।)

मेहरअली—हुज़ूर ! हुज़ूर ! कहाँ गए नवाब साहब ?

रायदुर्लभ—नवाब मीर जाफ़र आराम फ़रमाते होंगे मेहरअली।

मेहरअली—उन्हें नहीं पूछ रहा हूँ। अपने नवाब सिराजुद्दौला को पूछ रहा हूँ।

रायदुर्लभ—तुम्हें मालूम नहीं कि नवाबी मसनद पर अब मीर जाफ़र साहब हैं ? सिराजुद्दौला की नवाबी प्लासी में ही ख़त्म हो गई मेहरअली।

मेहरअली—तुम लोगों के लिये, मेहरअली के लिये नहीं। नौकर हूँ, हुज़ूर—सरकार कहकर बात करने की

आदत पड़ गई है, पर जीते-जी नवाब कहकर यह सिर अगर झुकेगा, तो नवाब सिराजुद्दौला के आगे ही झुकेगा। मुझे फुर्सत नहीं है, बतला सको, तो बतला दो कि वह कहाँ हैं ?

रायदुर्लभ—होंगे कहाँ, उस कोठी में बंद अपने बीते हुए दिनों की याद कर रहे होंगे।

मेहरअली—नहीं जी, अभी तो अंदर गए थे बेटी उम्मत के पास। उसे गोदी में लिया, आँखों से नदी बह चली और बस चल दिए।....मरते-मरते हुज़ूर मोहनलाल साहब ने उन्हें याद किया था, वही उन्हें बतलाना चाहता हूँ ! चलूँ देखूँ, अभी अंदर ही होंगे।

रायदुर्लभ—तो मीरन ने मोहनलाल का भी मुँह बंद कर दिया ? मुझे जानकर खुशी हुई मेहरअली ! हिंदू होकर उसने मुसलमान नवाब का साथ दिया, इसका दंड तो उसे मिलना ही था !

मेहरअली—काश, वैसे हिंदू तुम भी होते। मैं पूछूँ, धरम की कितनी पोथियाँ पढ़ी हैं तुमने ? धरम का मरम भी जानते हो या यों ही हिंदू बन गए ? शर्म करो, शर्म। (प्रस्थान)

रायदुर्लभ—सब चले गए ! अमीचंद पागल हो

गया, क्योंकि फिरंगी ने वायदा करके भी उसे एक पाई नहीं दी। मीर मदन को प्लासी में घिरवाकर मीर जाफ़र ने मरवा डाला। राजवल्लभ का बेटा फिरंगी के क़ैदख़ाने में है। मोहनलाल को मीरन ने ख़त्म कर दिया। सिराजुद्दौला अपने घर में ही नज़रबंद हैं। उनका क्या हश्र होगा, भगवान् जाने। (इसी समय सिराजुद्दौला प्रवेश करते हैं, ठिठककर चलने लगते हैं।) लेकिन नवाबी मसनद पर फिर बैठा तो एक मुसलमान, मीर जाफ़र।

सिराजुद्दौला—(कड़ककर) फिरंगी के बूटों पर माथा रगड़ने के बजाय वह कहीं अच्छा है रायदुर्लभ! तुम लोगों के इस ज़हर ने ही मेरी हिंदू-मुसलमान रिआया के दिलों में फूट पैदा की। मेरी हिंदू प्रजा को मुसलमान राज के ख़िलाफ़ बग़ावत करने पर आमादा किया। मेरी मुसलमान रिआया को भड़काया कि सिराजुद्दौला हिंदुओं को ज़िम्मेदारी की जगहें क्यों देता है। आज उसका नतीजा सामने है, हिंदू और मुसलमान दोनों के गले फिरंगी की मुट्ठी में हैं। भाइयों की लड़ाई में तीसरा परदेसी घर का मालिक बन बैठा। यह शर्म की बात नहीं है रायदुर्लभ?

रायदुर्लभ—लेकिन हिंदू और मुसलमान, दोनो के धर्म अलग-अलग हैं। वह एक कैसे हो सकते हैं।

सिराजुद्दौला—जिस हवा में हिंदू साँस लेता है, उसी में मुसलमान। जो पानी हिंदू की प्यास बुझाता है, वही मुसलमान की। जो अन्न हिंदू खाता है, वही मुसलमान। जिस धरती में लोटकर हिंदू बच्चा बड़ा होता है, उसी में मुसलमान बच्चा भी खेलता है। सूरज की धूप और चाँद की चाँदनी हिंदू और मुसलमान, दोनो की है। ख़ुदा की न्यामतें दोनो पर एक साथ बरसती हैं। भगवान् के घर हिंदू और मसलमान का भेद नहीं होता रायदुर्लभ, यह सब इंसान का बनाया जाल है। (बीचवाली चौकी पर बैठ जाते हैं।) मुझे अफ़सोस है कि तुम लोगों ने सिराज को नहीं पहचाना।

[मीर जाफ़र का प्रवेश। साथ में मीरन। मीरन छिपाकर चौकी के पीछे एक नज़र डाल लेता है और आश्वस्त हो जाता है। मीरन के हाथ में एक हथकड़ी है।]

मीर जाफ़र—उफ़्, कहीं चैन नहीं। कहीं आराम नहीं। सोने गया, तो नींद नहीं आई। अरे सिराज, ले लो बाबा तुम अपनी नवाबी। फिरंगी ने किस जाल में फँसा दिया! मुझे आज़ाद साँस लेने दो।

सिराजुद्दौला—और उस जाल से अब तुम्हारा छुटकारा नहीं है नाना। वतन से बग़ावत करनेवाले आज़ादी की साँस की क़ीमत नहीं चुका सकते।

मीर जाफ़र—ज़ुबान बंद करो सिराज। देखता हूँ, तुम्हारी हिम्मत बढ़ती जा रही है। लड़ाई के मैदान से जोगियों का भेस बनाकर भागनेवाले के मुँह से बढ़-चढ़कर बातें अच्छी नहीं लगतीं। मीरन, डाल दो इसके हाथों में हथकड़ी।

[मीरन बढ़कर हथकड़ी पहनाता है, सिराजुद्दौला मुस्किराते हैं।]

सिराजुद्दौला—बस नाना ? बुज़ुर्गों का दिया हुआ हय आसीस सिर-माथे !

मीरन—(व्यंग्य से) हथकड़ी नवाब सिराजुद्दौला के हाथों में कैसी लग रही है अब्बा ?

सिराजुद्दौला—(उसी जगह खड़े हो जाते हैं, हथकड़ी झनझना उठती है।) तन-मन से वतन की ख़िदमत और इबादत का यह इनाम आज़ादी के दीवानों को हमेशा से मिलता आया है मीरन। (हथकड़ी चूम लेते हैं।) तुम इसकी क़ीमत नहीं जानते।

मीर जाफ़र—सिराज, तुम्हें अपने क़ैद होने का भी अफ़सोस नहीं है ?

सिराजुद्दौला—अफ़सोस ? अफ़सोस किस बात का नाना ? सिराज का जिस्म आज क़ैद है, लेकिन देश के इस कोने से उस कोने तक सिराज ने वतन की मुहब्बत और फिरंगी से नफ़रत की जो आग धधका दी है, उसे भी क़ैद करोगे ? है इतनी हिम्मत ? सिराज अपने ही आदमियों के धोखे का शिकार हुआ। फिरंगी तो बहाना है नाना। हिंदोस्तान को ले डूबे मीरन और मीर जाफ़र। रायदुर्लभ और राजवल्लभ, अमीचंद और यारलुत्फ़ खाँ !

मीर जाफ़र—सिराज !

सिराजुद्दौला—हाँ नाना, सिराज का काम पूरा हो चुका। खुदा को यही मंजूर था। अब प्यारा वतन लुट-कर रहेगा। कंपनी का जाल फैल रहा है, मकड़ी के इस जाले में समूचा हिंदोस्तान धीरे-धीरे फँस जायगा। या खुदा, वह दिन देखने के पहले ही मुझे उठा ले। (हाथ उठाकर दुआ माँगते हैं।)

[सहसा मीरन संकेत करता है। मंच पर लाल प्रकाश। मुहम्मद बेग झपटकर चौकी के पीछे से निकलता है और कटार सिराजुद्दौला के सीने में भोंक देता है। मीर जाफ़र अट्टहास करता हुआ बाहर निकल जाता है, साथ में मीरन और मुहम्मद बेग भी। मंच पर अकेले सिराजुद्दौला तड़प रहे हैं।]

सिराजुद्दौला—यह तुमने क्या किया मुहम्मद बेग ? तुमने....यह....क्या किया ? मीर मदन ने....मुझे...आगाह करने की कोशिश की थी....पर....मेरा दिल....इंसान की हैवानियत....मानने को तैयार न हुआ। (करुण रागिनी नेपथ्य से बज उठती है।) देख रहे हो नाना....नवाब अलीवर्दी ! मैंने....मैंने तुम्हारा हुक्म नहीं टाला। फिरंगी को.... फिरंगी को आख़िरी दम तक....ज़ेर करता रहा। उन्हें ख़ुद जमने नहीं दिया। आह !

(झपटती हुई अमीना और लुत्फ़ुन्निसा का प्रवेश।)

अमीना—(चीख़कर) बेटा सिराज ! मेरे लाल ! यह क्या हुआ मेरे लाल ? (सिर धुनने लगती है।)

लुत्फ़ुन्निसा—हाय, मैं लुट गई मेरे आक़ा ! मेरा सुहाग उजड़ गया। (सिराजुद्दौला का सिर उठाकर गोद में रख लेती है।)

सिराजुद्दौला—(हथकड़ी के हाथों से लुत्फ़ुन्निसा के आँसू पोछते हुए) तुम....सिराज की बेगम हो लुत्फ़ ! हँसो, ख़ुशियाँ मनाओ....कि तुम्हारा सिराज हिंदोस्तान पर.... क़ुर्बान हो रहा है। मैंने कहा था न, सिराज फिरंगी के हाथों....नहीं मरेगा। अपने भाई के हाथों मरेगा....और उसकी लाश तुम्हारी गोद में होगी। तुम्हारी आँखों....

के आँसू दखकर मर रहा हूँ बेगम। हँसो। हँसो, हँसो बगम।

अमीना—मैं अब कसे जियूँगी बेटा ?

सिराजुद्दौला—मेरी उम्र के....हिंदोस्तान के सब बेटों की तू मा बनकर जी मेरी मा ! सबको अपना प्यार दे और मेरी तरह....सब बेटों को वतन की आज़ादी पर मिटने के लिये तयार कर। ला, तेरे क़दमों की धूल माथे से लगा लूँ। आह ! (धरती पर हाथ फेरता हुआ) कितना सुख है वतन की ख़ाक में, मिट्टी से बनी यह देह....आज मिट्टी में ही मिल रही है। अलविदा प्यारे वतन, अलविदा। नवाब अलीवर्दी, मुझे मुआफ़ करना। मा, मा, लुत्फ़, बेगम, प्यारी बेटी उम्मत....अ....ल....वि....दा।

[तड़पकर उसकी देह शांत हो जाती है। अमीना और लुत्फ़ुन्निसा लाश पर लोटकर रो देती हैं। नेपथ्य में करुण रागिनी बज रही है। इसी समय नेपथ्य से 'अब्बा' कहती हुई उम्मत ज़हूरा भागती आती है और शव पर लोटने लगती है। पर्दा मिलता है।)